भगवत्कृपा

हनुमानप्रसाद पोद्दार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दैन्य–मूर्ति जो प्रभुकी कृपा अहैतुक पर कर दृढ़ विश्वास।
सहज शरण्य चरण–दर्शनका मनमें भर उमंग–उल्लास।।
जिसने डाल दिया अपनेको, आ, चरणोंमें बिना प्रयास।
सहज, सत्य, बेशर्त लुट पड़ा बनकर पद–रज–कणका दास।।
शरणागत–वत्सल प्रभुने पूछा न जरा भी पिछला हाल।
धर्म–जाति–दुष्कर्म आदिका किया न सहज कृपावश ख्याल।।
विमल बनाकर, उठा वरद कर रख मस्तक, कर दिया निहाल।
मुनि वाञ्छित दे दिया नित्य दुर्लभ सेवाधिकार तत्काल।।

(पद रत्नाकर पद सं० ६५२)

भगवत्कृपा अलौकिकने कैसे कर चमत्कार–व्यापार।
नरक–कीटसे बदल बनाया मुझको श्रेष्ठ विशुद्ध उदार।।
उतरे स्वयं मलिन जीवनमें मेरे परम सुहृद भगवान्।
लेकर प्रेम–ज्ञान–रसकी अति उज्ज्वल सम्पद अमित महान।।
मिटे जगतके दुःखद सारे द्वन्द्व, छा गया परमानन्द।
भुक्ति–मुक्तिकी मिटी वासना, लगे खेलने प्रभु स्वच्छन्द।।
अब तो सतत चल रहा केवल प्रभुका मधुर–मनोहर नृत्य।
यों कर दिया कृपाने मुझको अपनी करुणासे कृतकृत्य।।

(पद रत्नाकर पद सं० ११६०)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

।। श्रीहरिः ।।

भगवत्कृपा

हनुमानप्रसाद पोद्दार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

BHAGWAT-KRIPA

By

Hanuman Prasad Poddar

प्रकाशक

गीतावाटिका प्रकाशन

पो०– गीतावाटिका (गोरखपुर)

पिन–२७३००६

दूरभाष : (०५५१) ३१२४४२

E-Mail:- rasendu@vsnl.com

प्रथम संस्करण–श्रीराधाष्टमी सं० २०३६ वि०

दूसरा संस्करण– सं० २०५८ वि०

मूल्य — पाँच रुपये मात्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

।। श्रीहरिः ।।

निवेदन

भगवत्कृपापर विश्वास श्रद्धेय श्रीभाईजी हनुमानप्रसादजी पोद्दार के रोम–रोमसे निर्झरित होता था। अपने जीवनमें भगवत्कृपाके महत्त्वको स्वीकार करते हुए उन्होंने लिखा है—

अब तो सतत चल रहा केवल प्रभुका मधुर मनोहर नृत्य।
यों कर दिया कृपाने मुझको अपनी करुणासे कृतकृत्य।।

भगवान् श्रद्धेय श्रीभाईजीके हृदयमें स्वच्छन्दरूपसे खेलते थे। उनकी वाणी भवदीय वाणी है—यह कहना कोई अतिसयोक्ति नहीं है।

प्रस्तुत संग्रह श्रद्धेय श्रीभाईजीके भगवत्कृपा विष्यक लेखों, विचारों, पत्रों, पदों आदिका संग्रह है जो समय–समयपर 'कल्याण' में प्रकाशित हुए हैं। 'भगवत्कृपापर अटूट विश्वास' एक परम साधन है। उन्होंने इसे अपनी एक अतुल सम्पत्ति कहा है। पाठकगण इनका मननकर एवं इनको जीवनमें धारण करके एक दुर्लभ भगवदीय स्थिति प्राप्त कर सकते हैं। संसारके दुःखोंसे सहज ही छुटकारा पाया जा सकता है।

प्रकाशक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

।। श्रीहरिः ।।

विषय सूची

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

।। श्रीहरिः ।।

भगवत्कृपा

कृपाकी बात लिखी सो कृपा तो भगवान्‌की सदा सबपर और अनन्त है। हमलोग उस कृपापर जितना ही अपनेको छोड़ सकें, उतना ही लाभ उठा सकते हैं। जो कुछ भी भगवत्कृपाको सौंप दिया गया, वही सुरक्षित हो गया। भगवान्‌की कृपाके लिये कुछ भी असम्भव या असाध्य नहीं है। सभी स्थितियोंमें सभी प्रकारकी सहायता प्राप्त करनेके लिये भगवान्‌की कृपाका ही आवाहन करना चाहिये। सबसे अधिक कृपाके प्रसादका पात्र तो वह है जो अपनी सारी इच्छाओंको सम्पूर्णतया भगवत्कृपाके प्रति समर्पण करके उस कृपासे बननेवाले प्रत्येक विधानमें परम आनन्दका अनुभव करता है।

जबतक हम कुछ चाहते हैं, हमारी स्वतन्त्र इच्छा वर्तमान है, तबतक भगवत्कृपापर पूर्ण निर्भरता नहीं है। ऐसा न हो तो कम–से–कम अपनी प्रत्येक आवश्यकताके लिये तो भगवान्‌की कृपाकी ओर ही ताकते रहना चाहिये। दूसरा भरोसा कोई रहे ही नहीं, तभी उस कृपाका चमत्कार देखनेमें आता है। तभी मनुष्यको यह अनुभव होता है कि वह जिसे असम्भव मानता था, वही भगवत्कृपासे अनायास ही सम्भव हो गया और इस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भगवत्कृपाका द्वार सबके लिये खुला है। जो भी चाहे इसे पा सकता है। क्योंकि भगवान् सबके—जीवमात्रके—सुहृद हैं, कृपामय ही नहीं, मित्र हैं। कृपा तो परायेपर होती है। प्रेममें तो और भी निकटका सम्बन्ध है। बस, यही करनेका प्रयत्न कीजिये।

भगवत्कृपापर विश्वास

विश्वास करो, तुमपर भगवान्‌की बड़ी कृपा है; तभी तो तुम्हें मनुष्यका देह मिला है। यह और भी विशेष कृपा समझो जो तुम्हें भजन करनेकी बुद्धि प्राप्त हुई और भजनके लिये सुअवसर मिला। इस सुअवसरको हाथसे मत जाने दो, नहीं तो पछताओगे।'

• • •

तुम चाहे राजा हो या राहके भिखारी—तुम बड़े भाग्यवान् हो, अगर तुम अपने मनको भगवान्‌के भजनमें लगाते हो। भजनका धन जिसके पास है वह राहका भिखारी भी राजा है, और जो इस धनसे कंगाल है उस राजाको भिखारीसे भी ज्यादा कम नसीब समझो।

• • •

भजनमें तुम्हें कुछ भी त्याग नहीं करना पड़ता—काम वैसे ही करो जैसे करते हो। अब जो अपने लिये करते हो, इस शरीरके लिये करते हो—फिर भगवान्‌के लिये करोगे—अपनेको और शरीरको भगवान्‌की सेवाका साधन बना दोगे। काम तब भी ज्यों-का-त्यों ही होगा। हाँ, तुम्हारे सिरसे बड़ा भारी अहंकारका बोझ उतर जायगा। तुम मालिकके सेवक बनकर निश्चिन्त हो जाओगे। तुम्हारा मन करेगा उनका चिन्तन, शरीर करेगा उनकी सेवा, तुम तो खुद उनमें जा बसोगे।

• • •

देखो एक स्त्रीके लिये इग्लैंडके राजाने राज्य छोड़ दिया था। क्या तुम भगवान्‌के लिये मनकी दिशाको भी नहीं बदल सकते ? मोड़ दो न मनके मुँहको—उसे भोगोंकी ओरसे फिराकर भगवान्‌की ओर कर दो—गति ज्यों-की-त्यों ही रहेगी। हाँ, तब नरकके निन्दनीय और गंदे गर्तसे निकलकर तुम दिव्य स्वर्गकी—महान् सुखकी—परम शान्तिमय आनन्दकी सुधामयी भूमिकापर जरूर पहुँच जाओगे।

• • •

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भगवान्‌की कृपापर विश्वास करनेसे यह सब कुछ आप ही हो जायगा। विश्वास करो—अपनेको उसके द्वारा सुरक्षित समझे उसकी पग–पगपर झाँकी करो। देखो, भगवत्कृपा बरस रही है। सदा, सब समय, सब ओरसे, अनन्त धाराओंसे अविराम बरस रही है, उसमें नहाकर कृतकृत्य हो जाना तुम्हारे ही हाथ है।

• • •

जगत्‌के लोगोंके परिचयमें न आओ, न उनका परिचय प्राप्त करो। ऐसी चेष्टा करो जिसमें वे तुम्हें भूल जायँ और तुम उनको भूल जाओ, फिर केवल प्रभुका और तुम्हारा—दोका ही परस्पर परिचय रहे। चुपचाप तुम प्रभुकी सेवा करो और प्रभु उसे स्वीकार करें। जो दूसरोंको दिखानेके लिये सेवा करता है, उसकी सेवा भगवान् स्वीकार नहीं करते।

• • •

जगत्‌को सुधारनेकी ठेकेदारी छोड़ दो, इसे प्रभु आप ही सुधारेंगे। तुम तो प्रभुके चरणोंपर न्योछावर हो जाओ। चुपचाप पड़े रहो दीन होकर उन दीन–बन्धुके दरवाजेपर।

• • •

जो मनुष्य जगत्‌के लोगोंमें बहुत परिचित होना तथा उनके साथ रहना चाहता है, याद रक्खो—वह प्रभुके परिचयसे अपनेको दूर करना चाहता है और प्रभुके संगको भी छोड़ना चाहता है। जितना ही जगत्‌में अधिक परिचय प्राप्त करोगे, उतना ही प्रभुके परिचयसे हटोगे।

• • •

जो मनुष्य भोगोंके त्याग और भगवत्–प्रेमका बाना पहनकर भी लोगोंको अपना—अपने साधनका परिचय देना चाहता है, वह तो उस कुलटा स्त्रीके समान है जो किसी सुयोग्य पतिकी धर्मपत्नी होकर भी दूसरे लोगोंको रिझानेके लिये उन्हें अपना रूप और श्रृंगार दिखाती फिरती है !

एक क्षण भी भगवत्कृपासे वञ्चित नहीं

याद रक्खो—तुमपर भगवान्‌की कृपा नित्य–निरन्तर बरस रही है। वह सदा सब ओरसे तुम्हें नहला रही है। ऐसा कोई क्षण नहीं जाता, जिस समय तुम भगवान्‌की कृपासे वञ्चित रहते हो। वञ्चित रहते भी कैसे ? तुम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उनकी अपनी प्यारी–से–प्यारी रचना जो ठहरे। तुमपर वे कृपा करते, उनके हृदयमें तो पल–पलमें स्नेह उमड़ा आता है। सचमुच विश्वास करो—जबसे तुम हुए, न मालूम किस अज्ञातकालसे, तभीसे उन्होंने तुम्हें अपनी गोदमें ले रक्खा है। एक क्षणके लिये भी कभी उन्होंने तुमको दूर नहीं किया। उनका कल्याणमय करकमल निरन्तर तुम्हारे सिरपर रहता है और निरन्तर तुम उनका शीतल मधुर स्पर्श पा रहे हो।

• • •

तुम पूछोगे—फिर यह जो जलन हो रही है; दिन–रात हृदयमें शोक और विषादका दावानल धधक रहा है, इसका क्या कारण है ? ठीक है। इसका सच्चा उत्तर यह है—न तो आग है न तो जलन; यह सब उनकी लीला है। तुम जो जलनका अनुभव कर रहे हो और पूछ रहे हो, यह भी उनके लीलाभिनयका ही एक अंग है। तुम्हारा ज्ञान और अज्ञान, तुम्हारा सुख और दुःख, तुम्हारी तृप्ति और अतृप्ति, तुम्हारी शान्ति और संताप—यहाँतक कि तुम और मैं—सभी कुछ उनकी लीला है, उन्हींमें हो रही है, वे ही कर रहे हैं। आश्चर्यकी बात तो यह है, लीला और लीलामय भी भिन्न नहीं, एक ही है। वे स्वयं लीला करते हैं और स्वयं ही उसे देख–देखकर हँसते हैं।

• • •

तुम्हारी यह सुखकी कामना, तुम्हारी यह शान्तिकी चाह, तुम्हारी यह मिलनकी उत्कण्ठा—सब उन्हींका खिलवाड़ है। उनका यह खेल, पता नहीं कबसे चल रहा है। इसके आरम्भकालका पता आजतक किसीको न लगा और न आगे लगेगा ही। यह चलता ही रहता है। जिन्होंने देखा, इसे चलते ही देखा। खेलका रूप जरूर बदलता रहता है, सदा उसका एक–सा रूप नहीं रह सकता; परंतु खेल कभी खत्म नहीं होता। जब खिलाड़ी नित्य है तो खेल अनित्य कैसे हो ? इसीसे जाननेवाले संतलोग भगवान्की लीलाको अनादि और अनन्त कहते हैं।

• • •

यह जो सृष्टि दीख रही है, इसमें जो प्रतिपल सृजन और संसारका चक्र चल रहा है, इसमें जो शान्ति–अशान्तिकी लहरें लहरा रही हैं, यह सब भी उन्हींका रूप हैं। कभी भयानक और कभी सौम्य—रात और दिनकी भाँति दोनों एक ही लीलाकी दो दिशाएँ हैं। यहाँ कुछ भी विपरीत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं होता। सभी अनुकूल, सभी यथार्थ, सभी कल्याणमय और सभी ठीक हो रहा है। जो होना चाहिये, जैसा होना चाहिये; वह वैसे ही हो रहा है। यह सारी सृष्टि और उसकी क्रिया——उनकी आनन्दमयी चिन्मयी लीला है। उनका स्वरूप ही है।

• • •

जो होता है, होने दो——किसीके रोकनेसे रुकेगा भी नहीं। तुम तो बस, अपनेको उनकी मंगलमयी इच्छाके प्रवाहमें डाल दो। किसी खास स्थितिकी कल्पना छोड़कर निश्चिन्त हो जाओ। अब भी उसी प्रवाहमें ही पड़े हो, परंतु तुम्हें पता नहीं है, इसीसे भयानक और सुन्दरका भेद दीखता है। लीलामयसे प्रार्थना करो जिससे वे तुम्हें जता दें, जगा दें, तुम्हारी असली आँखें खोल दें। फिर तुम प्रत्यक्ष देख सकोगे कि तुम न कभी उनसे अलग थे, न अब अलग हो, न आगे ही अलग हो सकते हो। तुम तो उनकी अपनी ही रचना हो, उन्हींके स्वाँग हो, उन्हींके स्वरूप हो और उन्हींकी इच्छासे——उन्हींकी प्रेरणासे उन्हींके खेलानेसे उन्हींमें खेल रहे हो। आनन्द ! आनन्द !!

भगवान् परम सुहृद हैं

विश्वास करो——भगवान् सत्य हैं, नित्य हैं और सर्वत्र हैं। ऐसा कोई क्षण और स्थल नहीं जब जहाँ वे तुम्हारे साथ न हों।

विश्वास करो——भगवान् तुम्हारे परम सुहृद हैं और वे सर्वशक्तिमान् हैं एवं तुम्हारे चाहते ही वे अपनी सारी शक्ति लगाकर तुम्हारा कल्याण करनेको प्रस्तुत हैं।

• • •

विश्वास करो——भगवान् सत्यसंकल्प हैं। वे जब तुमसे मिलनेका संकल्प करेंगे, तब उसी क्षण तुमसे मिलकर तुम्हें कृतार्थ कर देंगे। तुम उन्हें चाहोगे अपने क्षुद्र, संकुचित और पाप–ताप–कलुषित जड़–मनसे, क्योंकि तुम्हारा मन ऐसा ही है और वे तुम्हें चाहेंगे अपने महान् विशाल और परमपवित्र दिव्य चिन्मय मनसे; क्योंकि उनका मन वैसा ही है। अतः उनके चाहते ही तुम कृतकृत्य और महान् बन जाओगे। तुम उन्हें दोगे अपनी कोई अनित्य, अपूर्ण और मायाजनित प्रिय वस्तु या अधिक–से–अधिक अर्पण कर दोगे अपना कर्मजन्य पाञ्चभौतिक रक्तमांसमय घृणित शरीर, क्योंकि तुम्हारे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पास वही है, और वे तुम्हें देंगे अपनी नित्य पूर्ण शाश्वत दिव्य वस्तु या अर्पण कर देंगे अपना नित्यपूर्ण सर्वधर्ममय सच्चिदानन्दस्वरूप क्योंकि उनके पास वही है। सोचो कितना लोभ है, उनसे मिलनेकी चाहमें, उन्हें चाहनेमें और उन्हें कोई वस्तु समर्पण करनेमें।

• • •

विश्वास करो—भगवान् तुम्हारे लियें कृपाकी मूर्ति ही हैं—'प्रभु मूरति कृपामयी है।' उनके पास इस कृपाके विपरीत या इसके अतिरिक्त और कुछ है ही नहीं। तब फिर तुम क्यों डरते हो कि कभी भगवान्‌की अकृपा हो गयी या कृपा न हुई तो जाने क्या होगा ? जब तुम्हें देनेके लिये उनके पास कृपाके अतिरिक्त दूसरी वस्तु है ही नहीं, तब वे देंगे कहाँसे और तुमको वह मिलेगी भी कैसे ?

• • •

विश्वास करो—जहाँ कहीं दुःख-संकट या पीड़ा-यातनाकी प्रतीति होती है, वहाँ वस्तुतः उनकी कृपा ही उस रूपमें प्रकट होकर तुम्हारा कोई महान् हित-साधन कर रही है, जिसको तुम जानते नहीं और इसीलिये उससे बचना चाहते हो, परंतु वे दयालु प्रभु तुम्हें उससे वञ्चित नहीं करना चाहते।

विश्वास करो—उनकी कृपाका कठोर रूप वैसा ही है जैसा निकम्मे खेलमें रमे हुए मैले-कुचैले और भूखे-नंगे पुत्रके प्रति स्नेहमयी जननीके द्वारा उसे नहलाने-धुलाने, खिलाने-पिलाने और सच्चा आराम पहुँचाकर सुखी करनेके उद्देश्यसे की हुई डाँट-डपट।

• • •

विश्वास करो—भगवान् नित्य-निरन्तर तुम्हारे ऊपर अपनी कृपासुधा-धाराकी अनवरत अजस्र वर्षा कर रहे हैं। तुम्हारे आगे-पीछे, बायें-दायें और ऊपर-नीचे केवल कृपाकी ही सुधाधारा बह रही है। तुम आपाद-मस्तक उसीमें सराबोर हो। तुम्हारी शक्ति ही नहीं जो उसको किसी ओरसे भी हटा सको।

भक्तके सच्चे हृदयकी पुकार भगवान् अवश्य सुनते हैं

आपने एक पत्रमें लिखा था कि अच्छी स्थितिमें भी भगवान्‌पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भरोसा नहीं होता तब साधनकी शिथिलतामें तो हो ही कहाँसे, परन्तु अब ज्यादा निराशा नहीं होती। सो भगवान्पर भरोसा तो अच्छी, बुरी सभी स्थितियोंमें रखना चाहिये। इसके सिवा और सहारा ही क्या है ? बलवान् और निर्बल सभीके बल एक भगवान् ही हैं, परन्तु अपनेको वास्तवमें निर्बल मानकर भगवान्के बलपर भरोसा रखनेवालेका बल तो भगवान् हैं ही। इस भगवान्के बलको पाकर वह अति निर्बल भी महान् बलवान् हो सकता है—'मूकं करोति वाचालं पङ्गु लंघयते गिरिम्' प्रसिद्ध है।

भगवान्को पुकारने भरकी देर है। बीमार बच्चा बाहर बैठी हुई माँको पुकारे तो क्या माँ उसकी पुकार नहीं सुनती या कातर पुकार सुनकर भी आनेमें कभी देर करती है ?

साधन और भगवत्कृपा

आपका कृपापात्र मिले बहुत दिन हो गये। मैं यहाँ बाढ़—पीड़ितोंके काममें लगा था, फिर श्रावणमें कलकत्ते चला गया, वहाँ बहुत दिन लग गये। स्वभावदोष तो है ही, इन्हीं सब कारणोंसे पत्रका उत्तर लिखनेमें देर हो गयी, क्षमा करें।

आप मुझको गुरुरूपसे देखते हैं, इस विषयमें मेरा यह निवेदन है कि आप ऐसा मानकर बड़ी भूल कर रहे हैं। मैं साधारण मनुष्य हूँ और किसी दूसरेका जिम्मा लेनेमें अपनेको असमर्थ देखता हूँ। गुरु तो वह हो सकता है जो स्वयं दोषरहित हो और जिसमें परमात्माकी प्रदान की हुई ऐसी प्रबल सात्त्विक शक्ति हो जिसके द्वारा वह शिष्यके किसी प्रयासकी अपेक्षा न रखकर अनायास ही उसके समस्त दोषोंका नाश करके उसे परमपदपर पहुँचा दे। मैं तो स्वयं अपने अंदर ऐसे दोषोंको देखता हूँ जिनसे छूटनेके लिये मुझे बार—बार प्रयास करना पड़ता है। ऐसी हालतमें मैं किसीका गुरु बनकर उसका जिम्मा लेता हूँ तो शायद उसके साथ विश्वासघात करता हूँ और अपनेको भी धोखा देता हूँ। इसलिये आप मुझे गुरु न मानकर एक मित्र ही मानिये। आप चाहेंगे तो मैं अपनी तुच्छ बुद्धिके अनुसार आपको सलाह देनेकी चेष्टा अवश्य करूँगा।

आपने लिखा कि 'मुझसे जितना जो कुछ यत्किञ्चित् साधन बनता है। मैं लगनसे करता हूँ। उससे जी नहीं चुराता, परन्तु उससे अधिक बनता ही नहीं इसके लिये क्या करूँ।' सो मेरी समझमें तो यही आता है कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनुष्य इससे अधिक और कुछ कर भी नहीं सकता। वह जी न चुराकर लगनके साथ जितना बन सके उतना किये जाय, तो शेष सब भगवान् आप ही कर–करा लेते हैं; परन्तु इतना याद रहे कि साधन या पुरुषार्थके बलपर भरोसा न रक्खे। भरोसा रखना चाहिये भगवान्‌की अनन्त कृपापर ही। किसी भी साधनके मूल्यपर भगवान् या भगवत्प्रेम नहीं खरीदा जाता। भगवान् या भगवत्प्रेम अमूल्य निधि है, उसकी कीमत कोई चुका ही नहीं सकता। भगवान् जब मिलते हैं, जब अपना प्रेम देते हैं——तब केवल कृपासे ही। वे देखते हैं, 'पानेवालेकी चाहको और उसकी लगनको।' यदि उसकी चाह सच्ची और अनन्य होती है, और यदि वह अपनी शक्तिभर तत्परताके साथ लगा रहता है तो भगवान् अपनी कृपाके बलसे उसके सारे विघ्नोंका नाश करके बड़े प्यारसे उसको अपनी देख–रेखमें रख लेते हैं और स्वयं अपने निज स्वरूपसे उसके योगक्षेमका वहन करते हैं।

कृत्रिमता या धोखा नहीं होना चाहिये, और अपनी शक्तिभर कमी नहीं होनी चाहिये फिर चाहे साधन हो बहुत थोड़ा ही, वही भगवत्प्रसादकी प्राप्तिके लिये काफी होता हैं और भगवत्प्रसाद उसकी कमीको आप ही पूर्ण कर लेता है। साधनपर जोर तो इसलिये दिया जाता है कि मनुष्य भूलसे कहीं आलस्य, प्रमाद और अकर्मण्यताको ही निर्भरता न मान बैठे, कहीं तमोगुणको ही गुणातीतवस्था न समझ ले। जो यथार्थमें भगवान्‌पर निर्भर करते हैं उनके लिये किसी भी साधनका कोई मूल्य नहीं है, उनके तो सारे कार्य भगवत्प्रसादसे ही होते हैं, और वह ऐसे विलक्षण होते हैं कि किसी भी साधनसे वैसे होनेकी सम्भावना नहीं है। कहाँ भगवत्कृपा और कहाँ मनुष्यकृत तुच्छ साधन !

आपके मनमें भगवद्भजनके फलस्वरूप कुछ भी पानेकी इच्छा नहीं है, आप भजनके लिये ही भजन करना चाहते हैं यह बहुत ही ऊँची बात है। बदला पानेकी इच्छा ही निर्बलता, शिथिलता और व्यभिचारभावकी उत्पत्ति करती है। भजन यदि भजन बढ़ानेके लिये ही——भजनके उत्तरोत्तर विशुद्ध और अनन्य होनेके लिये ही किया जाय तो वैसा भजन बहुत ही ऊँची चीज होती है। वैसे भजनके सामने मुक्ति भी तुच्छ समझी जाती है। परन्तु ऐसा भजन भी भगवत्कृपाके बलसे ही होता है। भजनमें कहीं अहंकार न आने पावे। अहंकारसे बड़ी बाधा उत्पन्न होती है। भजनमें तो आसक्ति होनी चाहिये।

आप भजनसे उकताते नहीं हैं यह बड़ी अच्छी बात है। उकताता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वही है जो जल्दी ही किसी फलकी इच्छासे भजन करता है या जिसके भजनमें श्रद्धा और अनुरागका अभाव होता है। श्रद्धा और अनुरागके साथ निष्काम भजन करनेवाला क्यों ऊबने लगा।

बस, करते जाइये; कभी थकिये मत; परन्तु किसी बात किसी बातकी अपेक्षा न रखिये ! प्रतीक्षा करनी ही हो तो कीजिये एकमात्र भगवत्कृपाकी। विश्वास कीजिये——भगवत्कृपा तो आपपर पूर्ण और अनन्त है ही, वह तो सभीपर है, आप जितना–जितना उसका अनुभव कर पाते हैं, उतना–उतना ही आप अपनेको सुरक्षित और निर्भय पाते हैं, उतना–उतना ही आपका भजन बढ़ता है और जितना–जितना विशेष अनुभव करेंगे, उतनी–उतनी ही आपकी निर्भरता, निर्भयता और भजनशीलता बढ़ती चली जायेगी।

भगवत्कृपाका सहज प्रवाह

.... साधनमें अपनी जानमें त्रुटि न हो और फलकी कोई भी शर्त न रहे, यही तो साधनाका सच्चा परमार्थ है। भगवान्‌की सहज कृपाका प्रवाह हमारी ओर निरन्तर आ रहा है। हम बीचमें अपनी शर्तें रखकर उस प्रवाहकी स्वाभाविक कल्याणमयी गतिमें बाधक बन जाते हैं। वह जैसे आता है, उसे वैसे ही आने दिया जाय। उसका कैसा स्वरूप होगा, वह कब हमारे समीप पहुँचेगा, और वह किस प्रकारसे आवेगा——यह जाननेकी कोशिश नहीं करनी चाहिये। सब उन्हींपर छोड़ देना चाहिये। यह चाहना तो दोषकी बात नहीं कि हमें उनकी कृपा प्रत्यक्ष हो। परन्तु उसके स्वरूप, प्रकार और कालकी चिन्ता न करके उन कृपामयका ही चिन्तन अनवरत करना चाहिये। बिना किसी शर्तके अपनेको निरालम्ब मानकर छोड़ देना चाहिये उनके श्रीचरणोंकी कृपाके भरोसेपर। वे जब, जैसे, जो उचित समझेंगे, वही कल्याणमय होगा। हम अल्पमति अदूरदर्शी प्राणी कहाँतक सोच सकते हैं। हमारा सोचना निर्भ्रान्त होगा, यह आशा भी नहीं है। हमें सोचना चाहिये केवल उनको; फिर वे सोचेंगे और 'कल्याण' का वह साधन भी वे ही जुटा देंगे। उनके समान सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ, परम सुहृद् और कौन होगा ? परन्तु भगवान्‌के भजनका प्रेमी तो इस तरहकी बात भी नहीं सोचता। उसके लिये तो भजन ही परम कल्याण है; जिसे वह कर रहा है। बस,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भगवान्‌का भजन छूटना ही उसके लिये महान् संकटका प्रसंग है—

'तदर्पिताखिलाचारिता तद्विस्मरणे परमव्याकुलता'

नारदजीका यह सूत्र इसी बातको बतलाता है। चाहना–पाना कुछ नहीं। कभी उनकी विस्मृति न हो !

भगवत्कृपापर विश्वास करें

.... से कहिये। घबरावे नहीं। घबराना तो भगवान्‌की दयापर अविश्वास करना है। वे परम मंगलमय हैं। वे जो कुछ करते हैं, परम कल्याण ही करते हैं। हमलोग असलमें भगवान्‌की कृपा नहीं चाहते। भगवान्‌की व्यवस्थाको—जो सर्वथा, सर्वदा हमारा कल्याण करनेवाली ही है (चाहे कड़वी दवाके समान कभी–कभी खारी भले ही लगे)—स्वीकार नहीं करते। हम चाहते हैं—अपनी बुद्धिमें जची हुई अनुकूलताको, जो समय–समयपर हमारा अमंगल करनेवाली होती है।

हम भगवान्‌की कृपाका जो अंश हमें अनुकूल दीखता है उतने ही को चाहते हैं, इसीसे उनकी पूर्ण कृपासे वञ्चित रह जाते हैं। ....को क्या सभीको यही रोग है। इसीसे इतनी पीड़ा है। यह पीड़ा अपनी ही भूलसे पैदा की हुई है। श्रीभगवान्‌पर विश्वास रखकर उनका नाम–जप करना चाहिये और उनकी कृपापर भरोसा करके अपनेको सर्वतोभावसे उन्हींपर छोड़ देना चाहिये। ऐसा न हो सके तो भी नाम–जप ही करना चाहिये। जैसा भाव हो उसीसे कल्याण होगा—आंशिक कृपाके दर्शन होगें और सांसारिक वासनाएँ किसी अंशमें पूर्ण होंगी। परन्तु इसमें घाटा यही रह जायगा कि शीघ्र ही भगवत्प्रेमकी प्राप्ति नहीं होगी।

• • •

.... से कहना चाहिये बने जितना नाम–जप बढ़ायें। नानाप्रकारकी मानसिक चञ्चलतासे ध्यान नहीं हो पाता, इससे घबरायें नहीं। विश्वास करके जप नियमपूर्वक अधिक करनेकी चेष्टा करें। भविष्यको निराशामय देखना तो भगवान्‌पर अविश्वास करना है। इसलिये बहुत प्रसन्न रहियेगा, भगवान्‌की कृपापर विश्वास रखियेगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भगवत्कृपा और विश्वास

मान और धनकी चाह किसे नहीं होती। संसारमें साधारणतया सभीको होती है। जिनको नहीं होती, वे अतिमानव हैं—महापुरुष है। इस दृष्टिसे यदि आपको धन–मानकी चाह है और वह आजकल और भी बलवती हो रही है तो इसमें कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। आश्चर्य तो तब होता जब अंदर छिपी हुई चाह अंदर–ही–अंदर दबकर मर जाती, उसका अस्तित्व ही नष्ट हो जाता।

जीवके अनन्त जन्मोंके भोगोंके संस्कार मनमें रहते हैं; उन संस्कारोंको लिये हुए वह मनुष्य–शरीरमें आता है; यहाँ आनेपर यहाँकी परिस्थितिके अनुसार किसी–किसीके वे पुराने संस्कार नये प्रतिकूल संस्कारोंसे दब जाते हैं और किसी–किसीके अनुकूल नये संस्कारोंका बल पाकर विशेषरूपसे बढ़ जाते हैं। यह स्मरण रखना चाहिये कि अनुकूल सहायता और शक्ति मिलनेसे पूर्वसंस्कारोंका बल और विस्तार बहुत बढ़ जाता है; क्योंकि उनकी सारी शक्तियोंको चारों ओरसे विकसित होनेका अवसर और सुभीता मिल जाता है। परन्तु प्रतिकूल बाधक शक्तिका सामना होनेपर पूर्वसंस्कारोंका बल बहुत क्षीण हो जाता है। कारण, उनको बाधक शक्तिका सामना करना पड़ता है, जिससे उनकी शक्तिका क्षय होता है और इस युद्धमें अपनी शक्तिके स्वाभाविक विकास और विस्तारका अवसर और सुभीता नहीं मिलता। यही नियम सबके लिये लागू होता है। अतएव हमारे सञ्चित कुसंस्कार यहाँ जब सत्संग, स्वाध्याय, सच्छिक्षा, सद्विचार, सद्वस्तुसेवन और भगवान्‌के भजनके प्रतापसे कुछ दब जाते हैं, तब हम सर्वथा शुद्ध हो गये। होता यह है कि कुसंस्कार नष्ट नहीं होते, दब जाते हैं, दुबक जाते हैं, छिप जाते हैं और अनुकूल शक्तिका सहारा न मिलनेसे प्रतिक्षण क्षीण होते चले जाते हैं। ऐसी अवस्थामें यदि सत्संग, सद्विचार, भजन आदि उपर्युक्त साधन चालू रहते हैं तब तो कुसंस्कारोंको सिर उठानेका मौका नहीं मिलता और अन्तमें वे भगवत्–शरणागति या तत्त्व–ज्ञानोदयके प्रभावसे मर जाते हैं; परन्तु जबतक ऐसा नहीं होता तबतक साधन न होनेसे अनुकूल वातावरण पाते ही उन्हें सिर उठानेका, और बाधा न पाने तथा बाहरी सहायता मिल जानेसे प्रबलरूपसे आक्रमण करके अपनी अबाध सत्ता जमानेके लिये कोशिश करनेका मौका मिल ही जाता है। ऐसी दशामें बड़े–बड़े नामी–गिरामी तपस्वी और साधकोंका पतन देखा जाता है,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमलोग तो किस बागकी मूली हैं।

मनुष्यको भगवान्‌ने एक विवेकशक्ति दी है, जिसके द्वारा वह भले–बुरेका निर्णय कर सकता है। यह विवेकशक्ति मनुष्यमात्रमें होती है, चाहे उसके पूर्वसञ्चित कर्म कितने ही अशुभ क्यों न हों। उसके जीवनका अन्त तीनों बातोंमें होता है—अतृप्ति, असफलता और पापसंग्रह। इसलिये भगवान्‌को ही जीवनका लक्ष्य बनाकर भगवान्‌के लिये ही जगत्‌के यथायोग्य सब कार्य करने चाहिये। समस्त जीवन उनकी पूजाका उपकरण बन जाय। जीवनका प्रत्येक पल उनके प्रार्थना–ग्रंथ एक–एक पृष्ठ बन जाय। तभी सुख–शान्ति और सच्ची स्थायी सफलताका दर्शन होंगे। मैंने खूब परीक्षा करके देखा है—भगवान्‌से रहित जगत्‌में बड़े–से–बड़े सुखों और भोगोंको प्राप्त सफल जीवन समझे जानेवाले पुरुष भी महान् दुःखी और सर्वथा असफल ही हैं। उनका हृदय सदैव अतृप्तिकी आगसे जलता रहता है। भोगोंसे तृप्ति कभी होती ही नहीं। इसके सिवा और भी नाना प्रकारके ऐसे दुःख, जिनकी दूसरे कल्पना भी नहीं कर सकते, उनके जीवन–संगी बने रहते हैं, जो सदा उन्हें सताया करते हैं। यह सत्य है।

भगवान्‌का ऐश्वर्य और भगवत्कृपा

सप्रेम हरिस्मरण। आपका कृपापत्र मिला। 'श्रीभगवान्‌में आपका प्रेम, श्रद्धा बहुत बढ़ जाय, आपके सारे दोष तुरंत मिट जायें तथा निरन्तर भगवान्‌का भजन–चिन्तन होने लगे।' आपकी यह इच्छा तो बहुत सुन्दर, सराहनीय और अनुकरणीय है। परन्तु मेरा पत्र पढ़ते ही ऐसा हो जाय, मैं ऐसी बात लिखूँ—आपका यह भाव सुन्दर होनेपर भी मुझे अपनेमें ऐसी बात नहीं दिखलायी देती कि मेरे लिखनेमात्रसे ऐसा हो जायगा।

कामिनी, काञ्चन और भोगोंकी आसक्ति—इनमें वैराग्य होनेसे या भगवान्‌के ऐश्वर्य, माधुर्य और सुहृदपनमें विश्वास होनेसे मिट सकती है। भोगोंमें सुख नहीं है। सुखका मोह है। भगवान्‌को छोड़कर भोग तो दुःखमय ही है। जैसे अफीम और संखिया जहर है, यह दृढ़ विश्वास है; इसीलिये लालच देनेपर भी, बहुत मीठी और सुन्दर मिठाईमें मिलाकर देनेपर भी कोई जान–बूझकर नहीं खाते; जानते हैं कि मर जायेंगे। इसी प्रकार भोगोंका—विषयमय परिणाम निश्चय हो जानेपर उनमें कोई रमेगा नहीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भगवान्‌ने तो गीतामें साफ ही कहा है—'भोगोंसे मिलनेवाला सुख आरम्भमें अमृत–सा मालूम होता है, परन्तु परिणाममें जहर–सा है।' (परिणामे विषमिव) यह बात हम पढ़ते–सुनते हैं, पर विश्वास नहीं करते कि यदि हमें धन, भोग आदिमें ही सुख मिलता है तो ये वस्तुएँ भी सबसे बढ़कर भगवान्‌में ही हैं। जगत्‌में जितने भोग, सुख, ऐश्वर्य हैं—सभी अनित्य हैं, विनाशी हैं और जो हैं सो भी अत्यन्त ही अल्प हैं। जगत्‌के सारे भोग–सुख–ऐश्वर्य एक स्थानपर एकत्र कर लिये जायँ तो वे सब मिलकर भी भगवान्‌के भोगेश्वर्यके करोड़वें हिस्सेकी छायाकी भी तुलना नहीं कर सकते।

'भगवान्' शब्दका अर्थ ही है—'जिनमें सम्पूर्ण ऐश्वर्य, सम्पूर्ण धर्म, सम्पूर्ण यश, सम्पूर्ण श्री, सम्पूर्ण ज्ञान और सम्पूर्ण वैराग्य—सदा एकरस अनन्त असीम निवास करते हैं, उनको भगवान् कहते हैं।'

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसः श्रियः।
ज्ञानवैराग्ययोश्चैव षण्णां भग इतीरणा।।

(विष्णु पु० ६। ५। ७४)

संसारमें बस छः ही प्रधान वस्तु हैं, जिनकी संसारी और साधक लोग कामना करते हैं—'ऐश्वर्य', 'यश' (कीर्ति, मान, बड़ाई आदि), 'श्री' (धन–दौलत, तेज, स्वरूप, सौन्दर्य, स्त्री–पुत्रादिसे सम्पन्नता आदि), 'ज्ञान' (लौकिक और पारमार्थिक ज्ञान) और 'वैराग्य'। इनमेंसे कोई किसीको चाहता है, तो कोई किसीको। परन्तु खेद तो यह है कि उन्हें चाहनेवाला चाहता है उससे, जिसके पास ये पूरी नहीं है; चाहता है वैसी, जो नाश होनेवाली है; चाहता है ऐसे किसीसे, जो दे या न दे अथवा जिसमें देनेकी शक्ति न हो और चाहता है ऐसी अवस्थामें कि जिसमें यदि कुछ मिल भी जाय तो रखनेको ठौर नहीं। मनचाही वस्तु सबको मिलती नहीं, मिलती भी तो अधूरी और दोषयुक्त ही मिलती है। एक जगह तो किसीको अधूरी भी प्रायः नहीं मिलती। ये छहों वस्तुएँ—पूरी–की–पूरी—इतनी कि जिसकी सीमा ही न हो—एक साथ, एक समय, चाहे जितनी, चाहे जिसको एक श्रीभगवान्‌में मिल सकती है; और भगवान्‌में वे सब वस्तुएँ सबसे बढ़िया ऐसी क्वालिटीकी हैं कि जिसकी हम तुलना ही नहीं कर सकते।'

भगवान् हैं हमारे सुहृद ! हममे अकारण ही प्रेम करते हैं—वे देनेको तैयार हैं अपने अतुल भण्डारकी चाभी। देर इतनी ही है कि हम विषयोंके मोहको छोड़कर उन्हींपर निर्भर हो जायँ और अपनी कोई भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वतन्त्र रुचि या इच्छा न रखकर अपनेको सर्वथा उन्हींकी मर्जीपर छोड़ दें। बस, भगवच्चरणोंमें अपनेको सर्वभावसे डाल दें। वे मारें या बचायें, उनकी इच्छा और क्या करें ?

'तदर्पिताखिलाचारिता तद्विस्मरणे परमव्याकुलता।' (नारद० १६)

'उन्हें सब कुद सौंपकर निश्चिन्त होकर उनका स्मरण करें। जगत्में कुछ भी हो जाय। जागतिक दृष्टिसे हमारा कुछ भी हो जाय। हमें कोई चिन्ता न हो, कुछ भी उद्वेग न हो, जरा भी हम न घबरायें। हाँ, उद्वेग, व्याकुलता हो तब, जब एक आधे पलके लिये भी हम भगवान्को भूल जायँ। उनका भूलना हमें सहन न हो। उस समय उस मछलीसे अधिक तड़प हमारे मनमें हो, जो जलसे निकालनेपर उसको होती है। विषय–सुखके लिये चाह ही न करें। विषय–सुखकी चाह––विषय–सुखके लिये होनेवाली चिन्ता और व्याकुलता तो दुःखको बुलानेके साधन हैं। बस, चाह हो ही नहीं, हो तो एक यही कि अपने प्रियतम भगवान्का चिन्तन एक आध क्षणके लिये भी न छूटे। प्रार्थना हो तो यही कि भगवान् ! 'तुम्हारे स्मरण बिना यह जीवन न रहे। एक क्षण भी तुम्हारा विस्मरण इस जीवनको न सुहावे। तुम कहीं रक्खो इसे, यह अपने कर्मवश कहीं जाय, बस, तुम्हारी स्मृति सदा बनी रहे और तुम अपना कल्याणमय हाथ––स्मृतिके रूपमें सदा सिरपर रक्खे रहो।

चहौं न सुगति सुमति संपति कछु रिधि सिधि बिपुल बड़ाई।
हेतुरहित अनुराग राम पद, बढ़ अनुदिन अधिकाई।।
कुटिल कर्म ले जाहिं मोहि जहँ जहँ अपनी बरिआई।
तहँ तहँ जनि छिन छोह छाडियो कमठ अंडकी नाँई।।

बस, तुम्हारे चरणोंमें प्रेम बढ़ता रहे, जिससे स्मरण आनन्दमय हो जाय।'

मान–बड़ाई–प्रतिष्ठा, भोग–वासना और कामिनी–काञ्चनका मोह तथा पाप–ताप सब बह जायँगे––भगवत्कृपाकी एक वर्षामें। अमोघ शक्ति है भगवत्कृपामें। उस भगवत्कृपापर विश्वास कीजिये; फिर शान्ति, समता, सर्वत्र भगवद्बुद्धि और 'सब कुछ भगवान्से ही होता है' यह विश्वास आदि सब अपने–आप ही आ जायँगे आपमें––जैसे राजाके पीछे उसकी सारी सेना आ जाती है। ये सब तो भगवत्कृपाके लवाजमें हैं। जहाँ भगवत्कृपाकी वृष्टि हुई कि काम बना।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कृपा तो है ही विश्वास कीजिए

अन्तमें और कुछ न हो तो तीन बातोंका ध्यान रखिये— (१) पापोंका त्याग, (२) दैवी सम्पत्तिका उपार्जन और (३) भगवन्नामका नियमित जप।

भगवान्‌की दयामें विश्वास

मेरे निवेदनके अनुसार तो आपको श्रीभगवान्‌में, उनकी अपार करुणामें, उनके अनन्त प्रेममें, उनकी अहैतुकी सुहृदतामें और उनकी असीम दयामें विश्वास करके यह दृढ़ निश्चय कर लेना चाहिये कि 'हमारा परम कल्याण निश्चित है।' यदि भगवान् पर विश्वास करके आप अपने कल्याणके लिये संशयहीन हो जायँगे तो आपका कल्याण निश्चित है। बस, भगवान्‌की दयापर विश्वास करने भरकी देर है। इस विश्वासकी प्राप्तिके लिये भी भगवान्‌से करुण प्रार्थना करनी चाहिये। एक बारकी हृदयकी करुणायुक्त पुकार भगवान्‌के आसनको डुला देती है 'जिन्हहि परम प्रिय खिन्न।' जो उनके लिये खिन्न होता है, जिसको उनका विरह–ताप जलाये डालता है, उससे मिले बिना वे नहीं रह सकते। रोगसे घबराइये नहीं। यह रोग यदि आपके अनन्तकालीन जीव–जीवनका अन्तिम रोग बन सके, तो रोगका स्वागत करना चाहिये। और ऐसा बन सकता आपके हाथ है। आपके हाथसे मेरा मतलब आपके पुरुषार्थसे नहीं है, हे नाथ ! सब कुछ तुम्हारे हाथ है, जो चाहो सो करो, तुम्हारी चीजमें मैं एतराज करनेवाला कौन। फिर मैं भी तो तुम्हारी ही चीज हूँ। एतराज करता हूँ तो तुम्हीं करते–करवाते हो। तुम्हीं तुम्हारी जानो और जो चाहो सो करो–कराओ।'

भगवान्‌की असीम कृपा

सप्रेम हरिस्मरण। आपका प्रेमभरा पत्र मिला। दया और स्नेह तो श्रीभगवान्‌का हम सभीपर अनन्त है, इतना अनन्त है, जिसकी कहीं कोई सीमा ही नहीं। मैं यहाँसे जानेवाला तो जल्दी था, परन्तु देर हो गयी। श्रीभगवान्‌का विधान मंगलपूर्ण ही होता है। पूज्यपाद श्रीमहाराजजीने जो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आर्शीवाद दिया सो उनकी बड़ी कृपा है। दिन बहुत आनन्दसे कट रहे हैं। भगवान्‌की बड़ी कृपा है। मैं तो बस इतना ही जानता हूँ—भगवान्‌की मुझपर असीम कृपा है। उसके सिवा और कोई महिमा हो तो पता नहीं और भगवान्‌से प्रार्थना भी यही है कि वे यदि कृपा करके जनावें तो अपनी ही महिमा जनावें—मेरे तो दोष ही दिखलावें। सचमुच बात भी यही है। मनुष्य तो दोषोंसे भरा है—परन्तु भगवान्‌का हृदय अनन्त माताओंके अनन्त हृदयोंके अनन्त एकत्रीकृत वात्सल्यकणोंका महान् अगाध समुद्र है। उस वात्सल्य–समुद्रकी कोई सीमा ही नहीं है। इससे भगवान् कैसा भी अपराधी कोई क्यों न हो, जरा भी सामने आते ही उसे पाप–शून्य करके अपनी मधुमयी पवित्र गोदमें लेते हैं। जो सामने नहीं आता, उसका भी अपनी सहज सुहृदतावश कल्याण ही करते हैं। प्रकार विभिन्न हैं, करते तो कल्याण ही हैं। कल्याणमय जो ठहरे ! श्रीभगवान्‌में वस्तुतः किसीका अकल्याण करनेकी शक्ति ही नहीं है। संसारमें दुःख–सुखके कोई भी कैसे भी दृश्य आवें, सभी उनकी कल्याणमयी लीलाके ही तो सीन हैं। बस, आनन्द–ही–आनन्द, कल्याण–ही–कल्याण ! आपकी निष्ठा, गुरुभक्ति, श्रद्धा सराहनीय है। आपका हृदय बड़ा निर्मल है। आपके निर्मल हृदयकी भावना मेरे लिये लाभदायक ही होगी, इसमें कोई सन्देह नहीं। आपकी निष्ठा, प्रेम, हृदयकी सरलता और निष्कपटता, श्रद्धा और विश्वास, भजन और भाव सभी उच्च स्तरके हों—यह तो मैं स्वाभाविक ही देखना चाहता हूँ।

भगवान्‌की कृपाशक्ति

एक पत्रमें आपने इस आशयकी बात लिखी थी कि किसी समय मेरे किसी संकल्पसे आपके मनमें बार–बार उठनेवाली एक बुरी वासना शान्त हो गयी थी, इसलिये अब मैं पुनः ऐसा संकल्प करूँ जिससे आपकी कोई दूसरी बुरी वासना भी शान्त हो जाय। इसपर मेरा यह निवेदन है कि यदि उस बार ऐसा हुआ तो इसमें प्रधान कारण भगवत्–कृपा और आपकी श्रद्धा है, मेरे संकल्पोंमें मुझे ऐसी कोई शक्ति नहीं दीखती जिसके बलपर मैं कुछ कर सकता हूँ ऐसा कह सकूँ। हाँ, आपके मनसे बुरी वासना नाश हो जाय यह मैं भी चाहता हूँ। आप भगवत् कृपापर विश्वास करें और श्रद्धापूर्वक ऐसा निश्चय करें कि 'भगवान्‌की दयासे अब मेरे मनमें अमुक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बुरी वासना कभी न उठे।' तो मेरा विश्वास है कि यदि आपका निश्चय दृढ़ श्रद्धायुक्त होगा तो आपके मनमें उक्त बुरी वासना हट सकती है। श्रीभगवान्‌की शक्ति अपरिमित है, जो मनुष्य अपनेको भगवान्‌पर सर्वतोभावेन छोड़ देता है, अपना सारा बल भगवान्‌के चरणोंमें न्यौछावरकर भगवान्‌के बलका आश्रय कर लेता है, तो भगवान्‌की अचिन्त्य महिमामयी कृपाशक्तिके द्वारा सुरक्षित होकर वह समस्त विरोधी शक्तियोंपर विजयी हो सकता है। निर्भरता अवश्य ही सत्य, पूर्ण और अनन्य होनी चाहिये। फिर उसे कुछ भी चिन्ता नहीं करनी पड़ती।

भगवान्‌की दयापर विश्वास

एक बात और, वह यह कि श्रीभगवान्‌की दयापर विश्वास करके उनका स्मरण करते रहना चाहिये। भगवान्‌पर निर्भर हो जानेसे सारी विपत्तियाँ अपने आप ही टल जाती हैं। भगवान् कहते हैं—तुम मुझमें मन लगाये रक्खो, फिर मेरी कृपासे सारी बड़ी–से–बड़ी कठिनाइयोंको सहज ही लाँघ जाओगे।

मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि।।

(गीता १८। ५८)

भगवान्‌की इस आश्वासन–वाणीपर विश्वास करके उनपर निर्भर होनेकी चेष्टा करनी चाहिये।

दुःखमें भी भगवान्‌की दया

मनुष्यकी दृष्टि अत्यन्त सीमित है। वह अपनी आँखोंके सामने घटनेवाली कुछ घटनाओंको ही केवल देख सकता है। उसकी दृष्टिमें केवल स्थूल देह ही सत्य है और वह ममता–मोहके चक्करमें फँसकर चाहता है कि मेरा और मेरे सम्बन्धियोंके स्थूल शरीर मुझसे अलग न हो। यदि कहीं उसकी इच्छाके विपरीत कोई घटना घटित हुई तो वह बहुत दुखी होता है और विक्षिप्त होकर भगवान्‌की सत्ता, महत्ता और उनकी दयालुतापर ही आक्षेप करने लगता है। परन्तु इससे भगवान्‌की दयापूर्ण दृष्टिमें कोई अन्तर नहीं पड़ता। सदासे सबका कल्याण करते आये हैं और कल्याण ही करते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहते हैं।

इसे इस प्रकार समझिये—कोई दयालु स्वामी अपने किसी कर्मचारीको कोई उच्चपद देना चाहता हो और इसीके लिये उसे एक स्थानसे दूसरे स्थानके लिये परिवर्तन कर रहा हो—परन्तु वह कर्मचारी और उसके घरवाले उच्चपद पानेकी बात न जानें, उस परिवर्तनका विरोध करें और रोयें-पीटें, पर दयालु स्वामी उनके रोने-गिड़गिड़ानेपर तनिक भी ध्यान न देकर अपनी दयाका वर्षा करता है। आपके सुपुत्र होनहार थे। उनके कर्म उज्ज्वल और साधना ऊँची थी—इस बातका यह प्रबल प्रमाण है कि अन्तिम श्वासतक उन्होंने भगवन्नामका उच्चारण किया। इससे सिद्ध होता है कि भगवान्‌ने उन्हें इससे भी उत्तम स्थिति देनेके लिये आपसे अलग किया और अपने पास बुलाया। भगवान् अपनी वस्तुको अपना लें, उसे बुलाकर सर्वदाके लिये अपने पास रख लें—यह हमारे लिये प्रसन्नताकी बात होनी चाहिये। परन्तु हमारी ममता, हमारे जन्म-जन्मान्तरोंका अभ्यस्त मोह हमें बार-बार कष्ट देता है और वही हमें इस बातके लिये प्रेरित करता है कि हम भगवान्‌की इच्छा पूरी न होने दें—अपनी इच्छा पूरी करें।

केवल आपके पुत्रको सुख हो और आपको दुःख—यह भी इस घटनाका उद्देश्य नहीं समझना चाहिये। क्योंकि आपकी पूरी ममता भगवान्‌पर ही होनी चाहिये। जैसे भगवान् जीवके अनन्य प्रेमी हैं वैसे ही वे उसके अनन्य प्रियतम भी हैं। वे चाहते हैं कि जीव मुझसे ही हँसे, मुझसे ही खेले और मुझसे ही प्रेम करे। जब जीव उनके दिये हुए खिलौनोंसे इतना उलझ जाता है कि स्वयं उनको भूल जाता है तब वे उन खिलौनोंको छीनकर उसकी पूरी ममता अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं। इस घटनाको पूर्णरूपसे आपके और आपके पुत्र—दोनोंके लिये ही हितकर समझिये। इसपर विचार कीजिये और अपने एकमात्र सुहृद, पूर्ण हितैषी भगवान्‌के प्रेम और श्रद्धासे सराबोर होकर उनके भजनमें लगे रहिये।

भगवान्‌की दयालुता पर विश्वास

जब तक मनुष्य परमात्माको नहीं प्राप्त कर लेता, तबतक नित्य नये जालोंमें फँसता ही रहता है। हम लोग अनन्त जन्मोंसे यही करते आ रहे हैं। परन्तु यह नहीं मानना चाहिये कि उबरनेकी कोई सूरत ही नहीं है।' तुम्हें भगवान्‌पर श्रद्धा रखनी चाहिये कि वे उबारनेवाले हैं, उनकी शरण लेते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ही सारे जाल सदाके लिये कट जाते हैं। घबराओ नहीं, 'अटकीं नाव' भगवत्कृपाके अनुभवरूपी अनुकूल वायुका एक झोंका लगते ही चल पड़ेगी। भगवान्‌की दयालुतापर विश्वास करो। जो दुःख, कष्ट और विपत्तियाँ आ रही हैं, उन्हें भगवत्कृपाका आशीर्वाद समझो और प्रत्येक कष्टके रूपमें कृष्ण–कन्हैयाके दर्शन कर उन्हें अपनी सारी सत्ता समर्पण करनेकी चेष्टा करो, कष्टोंको कृष्णरूपमें वरण करो, सिर चढ़ाओ, आलिंगन करो। परन्तु उनसे छूटनेके लिये कभी भूलकर भी कुमार्गपर चलनेकी कायरताके वेश मत होओ; लड़ते रहो—मनकी बुरी वृत्तियोंसे—ऐसा करोगे तो श्रीकृष्णकृपासे तुम्हारी एक दिन अवश्य विजय होगी, तुम सुखी होओगे। मैं भी चाहता हूँ तुमसे मिलना हो। परन्तु संयोग ईश्वराधीन है। मेरे दिलको तुम अपने साथ समझो। तुम्हारी स्मृति मुझे बार–बार होती है। तुम हर हालतमें मेरे प्रिय हो और रहोगे। शरीर और मनसे प्रसन्न रहनेकी निरन्तर चेष्टा करते रहो। भगवान्‌के नामका जप सदा करते रहो और उसे उत्तरोत्तर बढाओ।

भगवत्कृपासे भगवत्प्रेम प्राप्त होता है

सप्रेम हरिस्मरण ! आपका विनयपूर्ण कृपापत्र मिला। मेरे प्रति इतनी अनुनय–विनयकी भला क्या आवश्यकता थी ? इससे तो मुझे बहुत ही संकोच होता है। आपको भगवत्प्रेमकी प्यास है—यह तो बड़े आनन्दकी बात है। परंतु संसारका कोई भी प्राणी किसीको वह अमूल्य निधि दे सकनेका दावा कैसे कर सकता है। मुझमें ऐसा सामर्थ्य कहाँ है जो मैं किसी एक भी प्राणीको अपने प्रयत्नसे प्रभुप्रेमका एक भी बिन्दु दे सकूँ। यह परमामृत तो एकमात्र प्रभुके कृपाकटाक्षका ही प्रसाद है। जिस परम सौभाग्यशाली जीवपर उनकी कृपा प्रकट होती है, उसीको यह अमृत प्राप्त होता है। उनकी कृपा उन्हींके अधीन है। उसे किसी साधनद्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता। बल्कि जीवको जबतक अपने साधनोंका भरोसा रहता है, तबतक तो वह अधिकतर दुःखी ही रहता है। उसे पानेका यदि कोई उपाय है तो यही कि जीव निरुपाय हो जाय। सारे साधनोंका आश्रय छोड़कर एकमात्र कृपाकी ही उपासना करे, कृपाकी ही बाट जोहा करे। साधनोंका आश्रय छोड़नेसे यह मतलब नहीं है कि सत्पथको छोड़कर कुपथमें चलने लगे। इसका तात्पर्य केवल इतना ही है कि अपने सत्कर्मोंके मूल्यमें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रभुकृपाको पानेकी आशा न रक्खे। सत्कर्म साधनके रूपमें नहीं, स्वभावसे हों। साधन तो एकमात्र प्रभुकी इच्छाका अनुवर्तन हो। वे जैसे रक्खें उसीमें संतुष्ट रहे और केवल प्रभुप्रेमकी प्यास बढ़ाता रहे। इस प्यासकी पीड़ा जितनी बढ़ेगी, उतनी ही प्रभुकृपा सुलभ होती जायेगी। अतः प्रभुप्रेम ही प्रभुप्राप्तिका एकमात्र उपाय है। प्रभु स्वयं कृपा करके ही किसी जीवको अपनाते हैं। वह कृपा प्रभुकी इच्छासे कभी-कभी किसी भगवदीयके रूपमें आती है। किन्तु भक्त केवल यन्त्रवत् उसके प्रकट होनेका निमित्तमात्र होता है। वास्तवमें तो उसके द्वारा भगवान् ही अपने शरणापन्नपर द्रवित होते हैं। अतः आप श्रीभगवान्का ही आश्रय लीजिये। उनके आगे दीन होकर रोइये, उन्हींसे प्रार्थना कीजिये और उन्हींको अपना दुःख सुनाइये। वे करुणामय प्रभु सब प्रकार आपका मंगल करनेमें समर्थ हैं। शेष भगवत्कृपा।

कृपा-ही-कृपा

प्रिय महोदय ! आपका कृपापत्र मिला था। आपको क्या लिखूँ। भगवान् कितने कृपालु हैं, उनकी कृपा कैसी है—यह कोई कैसे बतला सकता है। वे तो कृपामूर्ति ही हैं; उनमें कृपा-ही-कृपा है। वहाँ न्याय नहीं है, इन्साफ नहीं है—यही करना पड़ता है। वे यदि न्याय या इन्साफ करते होते तो मुझ-सरीखे सहज पातकीकी न जानें क्या गति हुई होती। लोगोंके सामने मुँह दिखाने योग्य तो मैं रहता ही नहीं, जगत् मेरे मुँहपर थूकनेसे भी घृणा करता—अपने अपराधोंका ध्यान आनेसे तो न्यायकी बात यही जँचती है। पर उनकी कृपाशक्ति इतनी विचित्र है कि वह जहाँ भी कोई न्यायका प्रसंग आता है, वहीं उस न्यायमें प्रवेश कर जाती है और न्यायको तत्काल कृपाके रूपमें बदल देती है। सच्ची बात तो यह है कि भगवान् सदा कृपामय ही हैं, उनमें कृपा-ही-कृपा है। इसलिये उनका न्याय भी कृपामूलक ही है। अतएव निरन्तर उनकी कृपार दृढ़ विश्वास रखना चाहिये और उस परम करुणामयी माँ कृपादेवीके चरणोंपर अपनेको बिना शर्त न्योछावरकर देना चाहिये। बस, निश्चिन्त हो जाना चाहिये—कृपापर पूर्ण निर्भर हो जाना चाहिये। याद रखना चाहिये—

'जासु कृपा नहिं कृपा अघाती।' (मानस)
'प्रभु मूरति कृपामयी है।' (विनय पत्रिका)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुहृदं सर्वभूतानाम्' (गीता ५। २९

सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात् तरिष्यसि।' (गीता १८। ५८)

बस—कृपा, कृपा, कृपा ! भगवत्कृपा !!

भगवान्‌की सहज कृपामें विश्वास करो

सप्रेम हरिस्मरण ! मनुष्य दुर्बल प्राणी है। जन्म-जन्मान्तरसे उसे विषय-सेवनका अभ्यास है, संग भी विषयी जगत्‌का है। काम, क्रोध, लोभ, मोहके वश सदा वह योनि-योनिमें रहता आया है, इसलिये मनमें विकारों तथा दोषोंका रहना कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। पर भगवान्‌की कृपासे जब मनके दोष दीखने लगते हैं तथा उनके रहनेका दुःख होने लगता है, तब वे नष्ट होने लगते हैं—'जाने ते छीजहिं कछु पापी।' (मानस ७। १२१। १ ।।) वास्तवमें संसारके प्राणि-पदार्थोंमें सुखकी कल्पना किसी-न-किसी अंशमें बनी रहती है; इसीसे अनुकूल विषयोंमें आसक्ति रहती है, उनके प्राप्त करनेकी कामना होती है तथा उनके न मिलने या नष्ट हो जानेपर दुःख होता है। और इसीसे मनुष्यकी जानते-समझते हुए भी बुरे कर्ममें प्रवृत्ति होती है। कई बार भगवान्‌के नामपर भी नासमझीसे विषयासक्तिवश विषय-सेवन होता रहता है। पर भगवत्कृपापर विश्वास करके भगवान्‌के बलसे इस प्रवृत्तिको तथा इस प्रकारकी इच्छाओंको सर्वथा नष्ट कर देना चाहिये। इन्द्रिय-सुख-लालसा, मानकी इच्छा, शरीरके आरामकी कामना, अनुकूल प्राणि-पदार्थ-परिस्थितिकी लालसा—ये सभी हमारी यथार्थ भगवत्-प्रीतिमें बाधक हैं; परंतु इनका त्याग सहज नहीं है। इसलिये इनके त्याग या नाशकी सच्ची इच्छा जाग्रत करके अपनेको सर्वथा निर्बल मानकर सर्वसमर्थ प्रभुके शरण हो जाना चाहिये। प्रभु निर्बलके बल हैं, असहायके सहारे हैं वे ऐसे करुणामय हैं कि शरण होनेवालेके पापोंसे घृणा तो करते ही नहीं—छोटे बच्चेका मल जैसे माँ अपने हाथोंसे धो देती है, उसी प्रकार स्वयं उसके पापोंको धोकर साफ कर देते हैं, पापके मूलतकका नाश कर देते हैं—

'अहं त्वा सर्वपापभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।'

(गीता १८। ६६)

'पापयोनयः .... तेऽपि यान्ति परां गतिम्।।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(गीता ६। ३२)

उनकी घोषणा है। वे शुद्ध होनेपर अपनाते हों, ऐसी बात नहीं है। कोई कैसी बुरी-से-बुरी हालतमें हो, वह यदि भगवान्‌की शरणमें चला जाता है तो भगवान् उसे तुरंत अपना लेते हैं और तुरंत उसके पापोंका नाश कर देते हैं। अच्छा होनेपर रोगी वैद्यके पास क्यों जाय ? रोगकी अवस्थामें ही वह जाता है और वैद्य उसे अच्छा कर देते हैं। वैद्यकी सफलता रोगीको अपनाकर उसे अच्छा करनेमें ही है। इसीसे भगवान् पुनीतोंकी परवा नहीं करते, शरण आये पामरोंपर प्रीति करते हैं—

ऐसी कौन प्रभुकी रीति।
बिरद हेतु पुनीत परिहरि पाँवरनि पर प्रीति।।

(विनयपत्रिका २१४)

इसलिये कभी भी निराश न होकर सदा आशावादी रहना चाहिये। भगवान् करुणा-सागर हैं, उनकी सहज कृपासे हमारे सारे पाप-ताप तुरंत वैसे ही नष्ट हो जायँगे, जैसे सूर्योदय होते ही अन्धकार नष्ट हो जाता है। और यह विश्वास करना चाहिये कि 'भगवान्‌ने मुझे अपना लिया है।' जहाँ ऐसा विश्वास होने लगेगा, वहीं स्वाभाविक ही पाप-ताप नष्ट होने लगेंगे और जहाँ यह विश्वास सुदृढ़ और निश्चित हो जायगा, वहाँ फिर पाप-ताप रहेंगे ही नहीं। सारी अशान्ति नष्ट होकर शान्तिकी उपलब्धि हो जायेगी—

'सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति।।'

(गीता ५। २९)

शेष भगवत्कृपा।

भगवत्कृपा—अनिर्वचनीय

सम्मान्य महोदय ! सादर नमस्कार। आपका कृपापत्र मिला। मुझपर भगवान्‌की कैसी तथा कितनी कृपा है, इसके सम्बन्धमें आपने पूछा है। इसका क्या उत्तर दिया जाय ? भगवान्‌की कृपा अनन्त और अपार है, अहैतुकी और प्राणिमात्रपर है। 'सुहृदं सर्वभूतानाम्'—उनके श्रीमुखके वाक्य हैं, फिर किसपर, कितनी, कैसी कृपा है, कौन, कैसे बताये। अतुलनीय, अवर्णनीय, अचिन्त्य, अनन्त-अगाध कृपा-समुद्रकी थाह कौन पा सकता है ? मनुष्यके पास ऐसा कोई यन्त्र, मन्त्र या साधन है ही नहीं, जिससे वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भगवत्कृपाकी इयत्ताका पता लगा सके। ऐसा कोई मापक यन्त्र बना ही नहीं। फिर मेरी बात तो मैं क्या बताऊँ——मैं अपनी तथा अपने कार्योंकी ओर देखता हूँ तो ऐसा लगता है कि मैं नरकमें रहने लायक पापी भी नहीं हूँ; मेरे पाप उससे भी बड़े हैं। मैं सर्वथा दीन, हीन, मलिन, साधनहीन, पापहीन हूँ और उत्तरोत्तर अधोगतिमें जाना ही मेरे लिये उचित तथा न्याय़ है। पर जब भगवत्कृपाकी ओर देखता हूँ तो चकित रह जाता हूँ। कहाँ मैं नरकका भी अनधिकारी और कहाँ भगवत्कृपासे भगवान्‌का परम निज–जन! भगवत्कृपा मुझे दिखलाती है——प्रत्यक्ष, मानो स्वयं भगवान् अपनी सारी कल्याण–सम्पत्ति, प्रेम–सम्पत्तिके अगाध समुद्रको लेकर हृदयमें उतर आये हैं और उसको उन्होंने अपना नित्य–निवास बना लिया है। दिन–रात उन्हींकी लीला चल रही है——बाहर–भीतर। विशुद्ध प्रेमस्वरूप तथा ब्रह्मानन्दको भी आनन्द देनेवाले दिव्य रसके आधार, आगार–स्वरूप अनन्त रसरूप भगवान् स्वयं दिव्यातिदिव्य आनन्द निमग्न हुए आनन्द–नृत्य कर रहे हैं——नित्य–निरन्तर, अविराम, अभिराम!

न लोक है न परलोक; न भोग है न त्याग; न बन्धन है न मुक्ति; न 'मैं' है न 'तू'; न प्रारब्ध है न पुरुषार्थ; न जन्म है न मृत्यु। बस, एक ही रस विविध रसोंके आकारमें विविध–विचित्र रंगोंमें अबाध गतिसे प्रवाहित और उच्छलित है। एक ही लीलामय नित्य लीलायमान हैं।

यह है भगवत्कृपाका एक संकेतमात्र। विशेष भगवत्कृपा।

भगवत्कृपाकी वर्षा

प्रिय महोदय! सप्रेम हरिस्मरण। आपका पत्र मिला। साधनाकी व्यक्तिगत बातें प्रायः सबके सामने प्रकट करनेकी नहीं हुआ करतीं; तथापि आपका आग्रह है, इसलिये केवल इतना ही लिख रहा हूँ और सभीसे यही कहता भी हूँ तथा यह सत्य भी है कि अपनेमें अपनी दृष्टिसे मुझे अनेक–अनेक दुर्बलताएँ प्रतीत होती हैं। साधना और भगवत्प्रेमका जो स्वरूप कल्पनामें आता है, वह तो कहनेमें ही नहीं आता और जिसको लोगोंके सामने कहा जाता है, उसके अनुसार भी देखनेपर अपनेमें बड़ी त्रुटियाँ प्रतीत होती हैं; पर साथ ही यह अवश्य अनुभव होता है कि भगवान्‌की अहैतुकी कृपा किसीकी साधनाको नहीं देखती। वह तो जो उसपर विश्वास करता है,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसपर अकारण ही सदा बरसती रहती है और उसे सब प्रकारसे विशुद्ध बनानेमें लगी रहती है। मुझे यह विश्वास अवश्य है और मैं यह अनुभव भी करता हूँ कि भगवान्‌की अहैतुकी कृपा मेरे ऊपर निरन्तर बरस रही है और अगर मेरेमें किसीको कोई अच्छापन दिखायी देता है तो वह उस भगवत्कृपाकी ही कृपाका फल है।

सम्मानकी चाह मनुष्यमें बहुत दूरतक बनी रहती है। मनुष्य भगवान्‌के नामपर अपने व्यक्तित्वका प्रचार और अहंकी पूजा करवाने लगता है, यह उसकी एक कमजोरी है। आपने मेरे सम्बन्धमें पूछा, सो मुझे यही कहना चाहिये और यही लगता भी है कि इस कमजोरीसे मैं बचा नहीं हूँ। आपके कथनानुसार—पुस्तकोंपर मेरा नाम छपता है, 'कल्याण' में नाम छपता है, संस्थाओंके साथ नाम जुड़ा रहता है—इन सबमें मेरे यश प्राप्त करेनकी कामना न हो—यह कौन कह सकता है ? आप ऐसा नहीं मानते—यह आपकी गुणदृष्टि है। वस्तुतः अन्तर्यामी भगवान् ही सब जानते हैं। मैं तो अपने सामने भी अपनी प्रशंसा सुनता हूँ और उद्विग्न होकर कोई घोर प्रतिकार नहीं करता—यह भी कमजोरी ही है। पर यह सब होते हुए भी आप तो मुझे बहुत ऊँचा मानते हैं; आपकी इस मान्यताके लिये मैं क्या कहूँ ? पर इतना तो मैं भी मानता हूँ कि भगवान्‌की कृपाका बल मेरे साथ है और वह मेरे सारे बाधा-विघ्नोंको निरंतर हटाता रहता है और मैं अपने लक्ष्यकी ओर सतत अग्रसर हो रहा हूँ। मेरा मार्ग क्या है, कैसे अग्रसर हो रहा हूँ, उसमें क्या-क्या कठिनाइयाँ और सुविधाएँ हैं—ये सब चीजे बतानेकी नहीं होतीं। आपने कृपापूर्वक पत्र लिखे और समयपर मेरा उत्तर न जानेसे भी आप अप्रसन्न नहीं हुए—यह आपकी कृपा है। मैं बहुत ही कम पत्र लिख-लिखा पाता हूँ। मेरा विनीत अनुरोध है कि आप इसीमें संतोष कर लें। शेष भगवत्कृपा।

दुःखमें भगवत्कृपा

जब मनुष्य केवल संसारके अनुकूल भोगपदार्थोंकी प्राप्तिमें भगवत्कृपा मानता है, तब वह बड़ी भारी भूल करता है। भगवान्‌की कृपा तो निरन्तर है, सबपर है और सभी अवस्थाओंमें है; किंतु जो ये अनुकूल भोगपदार्थ हैं, जिनमें अनुकूल बुद्धि रहती है, ये सब तो मनुष्यको मायाके, मोहके बन्धनमें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाँधनेवाले होते हैं। मायाके मोहमें बाँधकर जो भगवान्से अलगकर देनेवाली चीज है, उसकी प्राप्तिमें भगवत्कृपा मानना ही गलती है। पर होता यह है कि जब मनुष्य भगवान्का भजन करता है, भगवान्के नामका जप करता है, रामायण और गीतादिका पाठ करता है और संसारके भोगोंकी प्राप्तिमें जरा–सी सफलता प्राप्त होती है, तब वह ऐसा मान लेता है कि मेरी यह कामना पूरी हो गयी, मुझे यह लाभ हो गया है। ऐसे पत्र मेरे पास बहुत आते हैं और मैं उन्हें प्रोत्साहित भी करता हूँ, परंतु यह चीज बड़ी गलत है। जहाँ मनुष्य अनुकूल भोगोंमें भगवान्की कृपा मानता है, वहाँ प्रतिकूलता होनेपर वह उलटा ही सोचेगा। वह कहेगा—'भगवान् बड़े निर्दयी हैं, भगवान्की मुझपर कृपा नहीं है।' अधिक क्षोभ होगा तो वह कह बैठेगा कि 'भगवान् न्याय नहीं करते।' इससे भी अधिक और क्षोभ होगा तो वह यहाँतक कह देगा कि 'भगवान् हैं ही नहीं, यह सब कोरी कल्पना है। भगवान् होते तो इतना भजन करनेपर भी ऐसा क्यों होता।' यों कहकर वह भगवान्को अस्वीकार कर देता है। इसलिये अमुक स्थितिकी प्राप्तिमें भगवत्कृपा है, यह मानना ही भूल है। पहले–पहले जब मनुष्यको सफलता मिलती है, तब तो उसमें वह भगवान्की कृपा मानता है, पर आगे चलकर वह कृपा रुक जाती है, छिप जाती है, वह कृपाको भूल जाता है। फिर तो वह अपनी कृतिको एवं अपने ही अहंकारको प्रधानता देता है। अमुक कार्य मैंने किया, अमुक सफलता मैंने प्राप्त की। इस प्रकार वह अपनी बुद्धिका, अपने बलका, अपनी चतुराईका, अपने कला–कौशलका घंमड करता है, अभिमान करता है। भगवान्को भूलकर वह अपने अहंकारकी पूजा करने लगता है। सफलता मैंने प्राप्त की है, मैंने विजय प्राप्त की, मैंने अमुक सेवा की, मैंने राष्ट्रका निर्माण किया, मैंने राज्य, देश तथा धर्मकी रक्षा की'—इस प्रकार सर्वत्र प्रत्येक कर्ममें अपना 'अहं' लगाकर वह अहंका पूजक तथा प्रचारक बन जाता है और जब इस 'अहं'की 'मैं' की पूजा नहीं होती, उसमें किसी प्रकारका किंचित् भी व्यवधान उपस्थित होता है, तब वह बौखला उठता है, दल बनाता है और परस्पर दलबंदी होती है। राग–द्वेष एवं शत्रुताका वायुमण्डल बनता है, बढ़ता है। मनुष्य जब ऐसे किसी प्रवाहमें बहने लगता है, तब भगवान् दया करके ब्रेक लगाते हैं। उसे उस पतनके प्रवाहसे लौटानेके लिये भगवान् कृपा करते हैं। श्रीमद्भागवतमें आया है—

बलिकी शक्ति बढ़ी। बलि विश्वविजयी हो गये। देवताओंकी शक्ति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्षीण हो गयी। देवता भयभीत होकर छिप गये। बलिका प्रतापसूर्य सम्पूर्ण विश्वपर छा गया। बलि भगवान्‌के भक्त थे। वे भगवान्‌की कृपा मानते थे। पर बलिके मनमें भी अपने इस विषयका अहंकार तो आया ही। उसमें निमित्त चाहे जो कुछ बना हो, पर भगवान्‌ने बलिपर कृपा की। बलिका सारा राज्य हरण कर लिया, बलिका सारा ऐश्वर्य हरण कर लिया। उक्त प्रसंगमें यह प्रश्न हो सकता है कि बलिके साथ भगवान्‌ने ऐसा क्यों किया ? स्पष्ट उत्तर है कि भगवान्‌ने बलिपर कृपा करनेके लिये ऐसा किया। भगवान्‌ने उनपर यह कृपा किसलिये की ? दयामय भगवान्‌ने उनपर अपनी कृपा–वृष्टि इसलिये की कि बलिको जो अपने राज्यका, विजयका अहंकार हो गया था। उनका मोह इस प्रकार बढ़ता रहता तो पता नहीं बलि क्या कर बैठते भगवान्‌को भूलकर। बलि कुछ कर न बैठें, बलिका ऐश्वर्य–विजय–मद न रहे, बलि भगवान्‌की ओर लग जायँ, इसलिये भगवान्‌ने बलिपर कृपा की। बलिने स्वयं इसे स्वीकार किया है। यह बात समझमें आनी कठिन है कि बलिका राज्य ले लिया, उनका सर्वनाश कर दिया, इसमें क्या कृपा की, पर सचमुच भगवान्‌ने उनपर बड़ी कृपा की।

बलिकके पितामह भक्तराज प्रह्लादने वहाँ भगवान्‌की स्तुति करते हुए कहा—'प्रभो ! आपने ही बलिको ऐश्वर्यपूर्ण इन्द्रत्व दिया था। आज आपने उसे छीनकर इसपर बड़ी कृपा की है। आपकी कृपासे आज यह आत्माको मोहित करनेवाली राज्यश्रीसे अलग हो गया है। लक्ष्मीके मदमें बड़े–बड़े विद्वान् मोहित हो जाते हैं। ऐसी लक्ष्मीको छीनकर महान् उपकार करनेवाले, समस्त लोकोंके महेश्वर, सबके अन्तर्यामी तथा सबके परम साक्षी आप श्रीनारायणदेवको मैं नमस्कार करता हूँ।' (भागवत ८। २२)

जब भगवान् किसीपर इस प्रकार कृपा करते हैं, तब उसके ऐश्वर्यका विनाश कर देते हैं। एक बार तो वह दुःखी हो जाता है। इसी प्रकार जिसके सम्मानकी वृद्धि हो जाती है, भगवान् उसका अपमान करवा देते हैं, लाञ्छित कर देते हैं, जिससे वह मानकी मायासे छूटकर भगवान्‌की ओर बढ़े। जितनी भी इस प्रकारकी लीलाएँ होती हैं, सबमें भगवान्‌की कृपा ही हेतु होती है। जो बढ़ रहा है, वह भगवान्‌को मानेगा ही क्यों ? जबतक जगत्‌में सफलता होती है, तबतक मनुष्य बुद्धिका अभिमान करता ही है और इसलिये भगवान् तथा धर्म दोनों ही उससे दूर हो जाते हैं। वह मोहवश अपने लिये असम्भव और अकर्तव्य कुछ भी नहीं मानता। 'मैं चाहे जो कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सकता हूँ, कौन बोलनेवाला है। किसकी जगत्में शक्ति है जो मेरी उन्नतिमें बाधा दे सके।' यों वह बकने लगता है, पर भगवान्की कृपासे ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है, जो उसकी सारी सफलताको चूर्ण कर देती है। तब वह फिर भगवान्की ओर देखता है। जबतक मनुष्यको संसारका आश्रय मिलता है, तबतक वह भगवान्की ओर ताकता भी नहीं। जबतक उसकी प्रशंसा करनेवाले, उसे आश्रय देनेवाले, उसकी बुरी अवस्थामें भी कुछ भी मित्र, बन्धु-बान्धव रहते हैं, तबतक वह उन्हींकी ओर देखता है। द्रौपदीके चीर-हरणका प्रसंग देखिये। भगवान्की ओर उसने तबतक नहीं देखा, तबतक उसने भगवान्को नहीं पुकारा, जबतक उसे तनिक भी किसीकी आशा बनी रही। वह उनकी ओर ताकती रही। उसने पाण्डवोंकी ओर देखा, द्रोणकी ओर देखा, विदुरकी ओर देखा और देखा पितामह भीष्मकी ओर। उसे आशा थी ये मुझे बचा लेंगे, किंतु वह जब सब ओरसे निराश हो गयी, उसे कहीं किञ्चित् भी आश्रय नहीं रह गया, तब उसने निराश्रयके आश्रय और निर्बलके बल भगवान्का स्मरण किया और भगवान्को आते कितनी देर लगती है। जहाँ अनन्यभावसे करुण आह्वान हुआ कि वे भक्तवत्सल प्रभु दौड़ पड़े।

सारे जगत्के अपनत्व, बन्धुत्व आदिके प्रति मनुष्यकी ममता जब नहीं छूटती, तब भगवान् कृपा करके ऐसी स्थिति उत्पन्न कर देते हैं जिससे उसे उनसे मुक्ति मिल जाय, उस ममताके बन्धनसे छूटनेके लिये वह विवश हो जाय और जब उस ममतासे वह छूटता है, तब उसकी आँख खुलती है और वह सोचता है कि मैं धोखा खा रहा था। मुझे 'मेरा-मेरा' करनेवाले सब पराये ही रहे। सब समय धोखा ही देनेवाले रहे। संसारका यह नियम ही है कि सांसारिक लोग सफलताके साथ चलते हैं और असफलताकी गन्ध आते ही सब-के-सब धीरेसे सरक जाते हैं। फिर ढूढ़नेपर भी उनका पता नहीं चलता। सुखमें जो प्रगाढ़ मैत्रीका प्रदर्शन करता था, तब वैसा प्रेम नहीं दिखाता। उस समय केवल भगवान् ही दीखते हैं और वे बड़े ही मधुर एवं स्नेहपूरित शब्दोंमें कहते हैं—'भाई! निराश मत हो, मेरे पास आओ।' सच बात तो यह है कि अपने परम सुखद अंकमें लेनेके लिये ही ऐसा करते हैं। अपनानेके लिये ही वे उसे जगत्से निराश करते हैं। फिर भी हम भूल करते हैं। धनमें, मानमें, कीर्तिमें, जगत्की प्रत्येक सफलता भगवान्की कृपाका अनुभव करें, यह अत्युत्तम है; किंतु दीनता, दुःख, अभाव, अकीर्ति और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

असम्मानकी स्थितिमें हमें उनकी मधुर मंगलमय कृपाका विशेष अनुभव करना चाहिये।

एक विधवा बहन हैं, अच्छे घरकी हैं। भगवान्‌की प्रेमी हैं, भजन करती हैं। उन्होंने बताया कि 'मैं परिवारमें रहती, मेरे बाल-बच्चे होते, देवरानियों-जेठानियोंकी भाँति मैं वस्त्राभूषण पहनती, इस प्रकार मैं संसारमें रम जाती, भजन करनेकी जैसी सुविधा और मन आज है, वैसा तब नहीं रहता। यह भगवान्‌की कृपा थी, जिसने मुझे जगत्‌के सारे प्रलोभन और सारे विषयोंसे दूर कर दिया, हटा दिया और इधर लगनेका सुअवसर दिया।' वास्तवमें यही बात है, जिसने हमें भगवान्‌में लगा रक्खा है। मनुष्य अमुक-अमुक प्रकारके वस्त्र पहननेको, अमुक-अमुक प्रकारके मकानमें रहनेको, अमुक प्रकारके भोजन करनेको और लोग मुझसे अमुक प्रकारसे बात करें, इसको तथा ऐसे ही अन्यान्य सांसारिक सुविधाओंको सुख मान रहा है; पर वस्तुतः वह सुख नहीं है। किसीने आपको आदरसे बुलाया और किसीने दुत्कार दिया—ये दोनों शब्द ही हैं। इससे कुछ बनता-बिगड़ता नहीं। किसीने पाँच सम्मानकी बात गलत कह दी और किसीने पाँच गाली दे दी। यद्यपि गाली देनेवालेने अपनी हानि अवश्य की। पर यदि आपके मनमें मानापमानकी भावना न हो, तो आपका उससे कुछ नहीं बिगड़ा। किंतु हमलोगोंने एक कल्पना कर ली। जगत्‌में हमारी कितनी प्रतिष्ठा हो गयी कितने हम अपदस्थ हो गये—हमें नित्य बड़ा भारी डर लगा रहता है। जरा-सी निन्दा होने लगती है, तो हम डर जाते हैं, काँप उठते हैं। पर भगवान् यदि जानते हैं कि निन्दासे ही इसका गर्व-ज्वर उतर सकेगा तो वे चतुर चिकित्सकके द्वारा कड़वी दवा दी जानेकी भाँति उसकी निन्दा करा देते हैं। निन्दा, अपमान, अकीर्ति, तिरस्कार, अप्रतिष्ठा तथा लाञ्छन आदि अवसरोंपर यदि हम भगवान्‌की कृपा मान लें, तो कृपा तो वह है ही, पर हमें तो अवकाश ही नहीं है कि हम इसपर विचार भी कर सकें। जबतक सफलता है, तबतक मिथ्या आदर है, पर हम मानते हैं 'हमें अवकाश कहाँ है, कितना काम है, हमारे बहुत-से प्रिय सम्बन्धी हैं, कितने मित्र हैं, कितने बन्धु-बान्धव हैं, कहीं पार्टी है, कहीं मीटिंग है, कहीं खेल है, कहीं कुछ है। सब लोग हमें बुलाते हैं, वहाँ हमें जाना ही है। क्या करें।' इत्यादि। पर भगवान् तनिक-सी कृपा कर दें, लोगोंके मनमें यह बात आ जाय कि इसके बुलानेसे बदनामी होगी तो आज सब बुलाना बंद कर दें। मुँहसे बोलनेमें भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सकुचाने लगें। भगवान्‌ने तनिक–सा उपाय कर दिया कि बस, अवकाश–ही–अवकाश मिलने लगा।

संत कबीरको इसी प्रकार लोगोंने बुलाना छोड़ दिया था। पास बैठनेसे निन्दा हो जायगी, इतना जानते ही लोग पास बैठना छोड़ देंगे। संसार तो वहीं रहता है, जहाँ कुछ पानेकी आशा रहती है। वह पानेकी वस्तु चाहे प्रशंसा ही क्यों न हो जहाँ कुछ पाना नहीं, वहाँ संसार क्यों जायगा, फिर तो लोग दूर ही रहेंगे।

एक बहुत बड़े धनी हैं, मानी हैं, उनके साथ बैठनेको मिल जाय, वे अपने साथ बैठा लें, कितनी प्रसन्नता होती है। यश जो बढ़ता है, और कहीं वे हमारे घर आ जायँ, तब तो 'ओ हो हो ! कितने भाग्यवान् हैं हम। इतने बड़े आदमी हमारी घर आये।' यह बड़ाई पानेका रोग है। मान पाना, बड़ाई पाना, यश पाना, धन पाना, आराम पाना—कुछ भी, जहाँ पानेकी इच्छा है और जहाँ यह पूरी होती है वह हम सब चाहते हैं, वहाँ हम सब जाते हैं। पर जहाँ यह पानेकी इच्छा पूरी न हो, कुछ देना पड़े, कुछ त्याग करना पड़े, चाहे मानका ही त्याग करना पड़े, कुछ बदनामी मिले, वहाँसे आदमी हट जाता है, कहता है यहाँ मेरा क्या काम। फिर जगत्‌वाले सब अलग हो जायँगे, जब उनको पानेकी कोई आशा नहीं रह जायगी। अपने घरके प्राणप्रिय व्यक्तियोंके मनमें भी, जिनके लिये लोग प्राण देते रहते हैं, ऐसी बात आ जाती है। पिता कमाते थे उनसे कुछ मिलता था। बड़े पूज्य थे, पर जब उनसे कुछ भी मिलनेकी आशा नहीं रहती, सेवा–श्रूश्रूषा करनी पड़ती है, तब पुत्र भी सोचने लगता है—'अब तो ये वृद्ध हो गये। बड़ा कष्ट है इन्हें, दूसरे शब्दोंमें 'ये मर जायँ तो अच्छा है।' अपने परिवारवालोंको जाने दीजिये, अपना ही शरीर दो–चार वर्ष रुग्ण रह जाता है, ओषधि खानेपर भी अच्छा नहीं होता है, तो निराशा हो जाती है और मनमें आता है कि शरीर छूट जाय तो अच्छा हो। साथ रहनेवाले मित्र, बन्धु–बान्धव तरह–तरहकी बातें कहने लगते हैं। 'घर नरक हो गया, रहना तो यहीं है, क्या किया जाय, बड़ा दुःख है।' वे लोग उसकेसाथ रहनेमें सुख नहीं मानते। उस समय मित्रता नहीं रह जाती। बन्धुता विलीन हो जाती है। सारा प्रेम और सारी आत्मीयता हवा हो जाती है। ऐसे अवसर भगवान् मनुष्यको चेतनेके लिये ही देते हैं। भगवान् क्या करते हैं ? मनुष्य जिसे–जिसे सुखको सामग्री मानता है, उसे मिटा डालते हैं। सुखकी सारी सामग्रियोंको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तहस–नहस कर डालते हैं और जहाँ सुखकी सामग्री मिटी कि सब झंझट मिटा। जहाँतक चीलकी चोंचमें मांसका टुकड़ा है, वहींतक कौए–चील उसके पीछे–पीछे उड़ते हैं। जहाँ मांसका टुकड़ा गिरा कि उससे दूर भागे। जगत्‌की वस्तुएँ मांसके टुकड़ेकी तरह हैं और सारे मनुष्य कौएकी तरह हैं। भागवतमें आता है—अवधूतने चीलसे यही शिक्षा ली। मान नहीं रहे, धन नहीं रहे, स्वास्थ्य नहीं रहे, यश नहीं रहे, मकान नहीं रहे, नौकर–चाकर नहीं रहे, खानेको न रहे, तो फिर कौन पास आयेगा ? पर यदि कोई बुद्धिमान् हो तो निश्चय ही सोचेगा कि भगवान्‌ने कितनी कृपा की कि मेरे जितने गिरनेके अवसर थे सबको हटा लिया।

श्रीमद्भागवतमें नलकूबर और मणिग्रीवकी कथा आती है। ये दोनों कुबेरके पुत्र थे। अलकामें रहते थे। दिन–रात विहार किया करते थे। इनको कोई रोकनेवाला नहीं था।

यौवनं धनसम्पत्तिः प्रभुत्वमविवेकता।
एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्।।

यौवन, धन–सम्पत्ति, प्रभुत्व और अविवेक—इन चारोंमेंसे एक भी हो तो अनर्थका कारण होता है, पर जहाँ ये चारों साथ हो जायँ, वहाँ तो फिर कहना ही क्या है। कुबेर–पुत्रोंमें ये चारों थे। वे जवान थे, धन–सम्पत्ति थी, प्रभुत्व था और था अविवेक। यौवनका मद था, धनका मद था, अधिकारका मद था, कुबेरके पुत्र थे, स्वेच्छाचारी थे, अविवेकी थे। एक दिनकी बात है। ये दोनों अप्सराओंके साथ नंगे नहा रहे थे—विलास कर रहे थे। उधरसे श्रीनारदजी आ निकले। श्रीनारदजीको देखते ही स्त्रियाँ तो जल्दी बाहर निकल गयीं और वस्त्र पहन लिये, किंतु ये दोनों बड़े उद्दण्ड थे, उसी तरह नंगे खड़े रहे। नारदजीने कहा 'तुम दोनों जड़की भाँति खड़े हो, जाकर वृक्ष हो जाओ।'

प्रश्न होता है ऋषि–मुनि तो क्षमाशील होते हैं, बुरा करनेवालेका भी भला करते हैं। उनमें क्रोध कैसे उत्पन्न हुआ और उन्होंने नलकूबर और मणिग्रीवको शाप कैसे दे दिया ? वहाँ आता है संतोंकी अवमानना बड़े विनाशकी चीज है करनेवालेके लिये।

दूसरी बात, जब धनमें, राज्यमें, अधिकारमें, सफलतामें आदमी अंधा हो जाता है, तब जबतक उसके पास वे चीजें रहती हैं तबतक उसका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंधापन नहीं मिटता। उसे प्रेमपूर्वक समझानेका प्रयत्न किया जाय, तो वह उल्टा नाराज हो जाता है, बिगड़ खड़ा हो जाता है। ऐसी अवस्थामें उसकी दवा यही है कि वह वस्तु उसके पास न रहे। जो धन–दुर्मदान्ध होते हैं, जिनको धनके मदने अंधा कर दिया है, अपनी सफलताके नशेमें जो बिल्कुल पागल हो रहे हैं, अंधे हो रहे हैं ऐसे दुष्टोंके लिये दरिद्रता ही परम ओषधि है।

'असत्ः श्रीमदान्धस्य दारिद्र्यं परमाञ्जनम्।'

उनके पाससे उन वस्तुओंका हट जाना ही उनको नेत्रदान करता है। किसीको ज्ञान–मद हो जाता है। भगवान् उसे हर लेते हैं। भगवान् हमारी मनचाही नहीं करते। नारदजीने इसीलिये उन्हें शाप दिया कि जिससे उन बेचारोंका यह रोग—धन–मद नष्ट हो जाय। उनको आँखें मिल जायँ और वे भगवान्‌को प्राप्त करें। जड़तारूप इस कड़ी दवाके साथ नारदजीने उनको मधुरतम दुर्लभ आशीष भी दिया कि 'वृक्षयोनि प्राप्त होनेपर भी मेरी कृपासे इन्हें भगवान्‌की स्मृति बनी रहेगी और देवताओंके सौ वर्ष बीतनेपर इन्हें भगवान् श्रीकृष्णका सांनिध्य प्राप्त होगा, तब इनकी जड़ता दूर हो जायगी। इन्हें भगवच्चरणोंका प्रेम प्राप्त होगा। ये कृतार्थ हो जायँगे।'

स्वयं श्रीनारदजीने चाहा था—'हम राजकुमारीसे विवाह कर लें; पर भगवान्‌ने उन्हें वानरका मुँह दे दिया। यह कथा शिवपुराण और रामचरितमानसमें आती है। श्रीनारदजीको बड़ा दुःख हुआ। श्रीभगवान्‌को बहुत कुछ कह गये, 'भगवान् तो स्वेच्छाचारी हैं, उन्हें किसीका सुख–सौभाग्य नहीं सुहाता। वे अपना ही भला चाहते हैं आदि' न जाने क्या–क्या मोहमें वे कह गये। परंतु भगवान्‌ने उनपर कृपा की। पीछे उन्हें पश्चात्ताप भी हुआ। भगवान्‌ने उन्हें बताया, 'हमने आपके हितके लिये ऐसा किया था—

अवगुन मूल सूलप्रद प्रमदा सब दुख खानि।
ताते कीन्ह निवारन मुनि मैं यह जिय जानि।।

आप–सरीखे विरक्तके लिये स्त्री सारे अवगुणोंकी जड़, शूलप्रद तथा समस्त दुःखोंकी खान है, यही मनमें विचारकर मैंने आपका विवाह नहीं होने दिया।'

भगवत्कृपाका यह विलक्षण भाव देखकर नारदजीका शरीर रोमाञ्चित हो गया। नेत्रोंमें प्रेम तथा आनन्दके अश्रु छलक उठे—'मुनि तन पुलक नयन भरि आए।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह समझ लेनेकी वात है। कहीं हमारे विषयोंका हरण होता है, मनचाही वस्तु नहीं मिलती, वहाँ निश्चय ही समझना चाहिये कि भगवान् हमपर कृपा करते हैं। भगवान्‌की कृपाका कोई एक रूप नहीं है। वह न मालूम कब किस रूपमें प्रकट होती है। पर जागतिक असफलता उसका एक रूप है। हम संसारके भोगोंकी, विषयोंकी, अनुकूल विषयोंकी प्राप्तिमें जो भगवान्‌की कृपा मानते हैं, यह भगवान्‌की कृपाका एकांकी दर्शन है और एक प्रकारसे असत–दर्शन है। भगवान्‌की कृपा निरन्तर है, सबपर है, सब समय है, बल्कि जहाँ भगवान् हमारे अनुकूल विषय–भोगोंका अपहरण करते हैं, विनाश करते हैं, वहाँ भगवान्‌की कृपा विशेषरूपसे प्रस्फुटित होती है, जब मनुष्य भगवान्‌को भूल जाता है, उनकी अवहेना करता है, जब वह अध्यात्मको, परमार्थको सर्वथा भूलकर जागतिक, लौकिक, स्वार्थकी सिद्धिमें लग जाता है तब भगवान् कृपा करते हैं। जो पापके प्रवाहमें बह रहा है, भगवान् उसकी सफलताको बलात्कारसे अपहरण करते हैं। जो वस्तु उसे अभिलषित है, उसे प्राप्त नहीं होने देते और जो वस्तु उसे प्राप्त है, जिसने उसे मोहित कर रक्खा है, उसे छीन लेते हैं, नष्ट कर देते हैं—

'यमहमनुगृहणामि हरिष्ये तद्धनं शनैः।'

यह मानभंग, यह ऐश्वर्य–नाश आदि भगवान्‌की बड़ी कृपासे होता है। यदि कोई धनका होकर रह रहा है, तो भगवान् चाहते हैं कि वह धनका न होकर हमारा होकर रहे। उसका धन–ऐश्वर्य आदि सब कुछ ले लेते हैं। भगवान् तो चाहते हैं उसे अपनाना। वे उसे अपनी गोदमें लेना चाहते हैं। पर जबतक जगत् उसे अपनाये है, तबतक वह ऐसा मोहमें रहता है कि मानो सारा जगत् ही हमारा है। तबतक उसे भ्रम रहता है कि मानो सारा जगत् ही हमसे प्यार करता है। वह जगत्‌में चारों ओर आशा लगाये रहता है। उसमें भूलकर वह भगवान्‌को भूल जाता है। उसमें जगत्‌का प्रेम, जगत्‌की ममता, जगत्‌का बन्धन प्रगाढ़ और विस्तृत होता जाता है। भगवान् उसे दिखाते हैं कि तुम्हारे साथ प्रेम करनेवाला, तुम्हें अपना माननेवाला, तुम्हें आश्रय देनेवाला मेरे अतिरिक्त कोई स्थिति, कोई अवस्था, कोई प्राणी और कोई सम्बन्धी है ही नहीं। ये सब धोखेकी चीजें हैं। वह धोखेकी चीज मान ले इसके लिये भगवान् ऐसी स्थिति उत्पन्न करते हैं। जैसे हम आपसे प्रेम करते हैं, आपके लिये प्राण देनेकी बात करते हैं, पर कहीं आपपर कोई लाञ्छन लग जाय, आपका कोई पाप प्रकट हो जाय, जगत् आपसे घृणा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करने लगे, आपके पास बैठनेमें लोक–लज्जाका अनुभव होने लगे, उस समय हम आपके पास नहीं बैठ सकेंगे। उस समय बड़ा सुन्दर तर्क देते हुए हम कह देंगे—'अंदरसे हमलोगोंका प्रेम तो बना ही है, पर बाहर प्रकट करके अपयश लेनेसे क्या लाभ ?' कल जो उसकी बड़ाईमें, उसके यशमें, उसके सुखमें हर समय हिस्सा ले रहे थे; आज वह बुरा आदमी माना गया है, इसलिये उसे अपना स्वीकार नहीं करते। उनका प्रेम, ममत्व, अपनत्व कहाँ चला गया ? मनुष्य पाप करता है पर क्या वह अपनेसे घृणा करता है। श्रीनारदजीने प्रेमका स्वरूप बताया—'गुणरहितम्', 'कामनारहितम्'। प्रेम गुणरहित और कामनारहित होता है। प्रेम गुण और वस्तुकी अपेक्षा नहीं करता।

सच बात तो यह है कि भोगासक्त संसारवालोंका प्रेम है ही नहीं, सच्चे प्रेमी तो प्रभु हैं, जो गुण नहीं देखते और कामना तो उनके मनमें है ही नहीं। भगवान्‌का प्रेम ही असली प्रेम है। अतएव भगवान्‌को छोड़कर भोगोंमें जो मन लगता है, सो बड़े ही दुर्भाग्यकी बात है। मजेकी बात तो यह है कि जगत्‌में जिन लोगोंके पास जगत्‌की कुछ वस्तुएँ हैं, वे अपनेको भाग्यवान् मानते हैं और मूर्खतावश और लोग भी उन्हें 'भाग्यवान्' कहते हैं। किंतु एक फकीर जिसके पास जगत्‌की कोई वस्तु नहीं है और जिनकी उसे कामना भी नहीं है तथा जो अपनी स्थितिमें भगवान्‌का स्मरण करते हुए सर्वथा निश्चिन्त और मस्त है, उसे लोग गरीब या अभागा कहते हैं और कह देते हैं—'बेचारेको सुख कहाँ ?' पर जो पदार्थ हमें भगवान्‌से दूर कर दे और जो नरकानलमें दग्ध करनेमें सहायक हो, उस पदार्थजनित भाग्यशीलताके लिये क्या कहा जाय ? गोस्वामी श्रीतुलसीदासजीने कहा है—

सुनहु उमा ते लोग अभागी। हरि तजि होहिं विषय अनुरागी॥

श्रीशिवजी कहते हैं—'वे अभागे हैं, भाग्य फूटा है उनका जो भगवान्‌को छोड़कर विषयोंसे प्रेम करते हैं। सौभाग्यवान् कौन ? जो सबको छोड़कर भगवान्‌की सेवामें लग जाता है। भरतजीने श्रीलक्ष्मणके भाग्यकी सराहना करते हुए कहा था—

अहह धन्य लछिमन बड़भागी। राम पदारबिंदु अनुरागी।

लक्ष्मणके समान कौन बड़भागी है, जिसका श्रीरामके चरणोंमें अनुराग है। श्रीतुलसीदासजीने कहा है—

रमा बिलास राम अनुरागी। तजत बमन इव नर बड़भागी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'रमाके वैभवको जो रामानुरागी जन वमनके समान त्याग देते हैं, वे ही बड़भागी हैं।' भोगरूपसे तो लक्ष्मी अलक्ष्मीके रूपमें—दुर्भाग्यके रूपमें रहती हैं। उस दुर्भाग्यके रूपको दूर करनेके लिये भगवान् कृपा करते हैं और कृपा करके हमने जिसे सौभाग्य मान रक्खा है, उसको हर लेते हैं। भगवान्‌के प्रेमको हरनेवाली सम्पूर्ण चीजोंको भगवान् हर लेते हैं, दूर कर देते हैं। मान गया, धन गया, यश गया, प्रतिष्ठा गयी, सब कुछ चला गया—मनुष्य रोने लगता है, छटपटाने लगता है, पर उस समय दयामय प्रभु मधुर-मधुर मुसकराने लगते हैं, हँसने लगते हैं कि 'यह मेरा प्यारा बच्चा विपत्तिसे बच गया।' जिसे हम सम्पत्ति मानते हैं, सचमुच वह विपत्ति ही ह।

विपदो नैव विपदः सम्पदो नैव सम्पदः।
विपद् विस्मरणं विष्णोः सम्पन्नारायणस्मृतिः।।

'जगत्‌की विपत्ति विपत्ति नहीं, 'जगत्‌की सम्पत्ति, सम्पत्ति नहीं, भगवान्‌का विस्मरण ही विपत्ति है और भगवान्‌का स्मरण ही सम्पत्ति है।'

श्रीतुलसीदासजीके शब्दोंमें—

कह हनुमान बिपति प्रभु सोई।
जब तव सुमिरन भजन न होई।।

जिस कालमें भगवान्‌का साधन-भजन—उनका मधुर स्मरण नहीं होता, वह काल भले ही सौभाग्यका माना जाय, उस समय चाहे चारों ओर यश, कीर्ति, मान, पूजा होती हो, सब प्रकारके भोग उपस्थित हों, समस्त सुख उपलब्ध हों, पर जो भगवान्‌को भूला हुआ हो, भगवान्‌की ओरसे उदासीन हो, तो वह विपत्तिमें ही है—असली विपत्ति है यह। इस विपत्तिको भगवान् हरण करते हैं, अपने स्मरणकी सम्पत्ति देकर। यहाँ श्रीभगवान्‌की कृपा प्रतिफलित होती है।

जब हम धन-पुत्रकी प्राप्ति, व्यापारकी उन्नति, कमाई, प्रशंसा, शरीके आराम, अच्छे मकान, कीर्ति, अधिकार आदिको भगवान्‌की कृपा मान लेते हैं, तब उसे बहुत छोटे-से दायरेमें ले आते हैं और गलत समझते हैं। भगवान्‌की कृपा यहाँ भी है, परंतु ये समस्त सामग्रियाँ भगवान्‌की पूजाके उपकरण बनी हुई हों तो और यदि ये सब भोगसामग्रियाँ, सारी-की-सारी चीजें भगवान्‌के पूजनका उपकरण न बनकर अपने ही पूजनमें मनुष्यको लगाती हैं, तो वहाँ भगवान्‌का तिरस्कार होता है, अपमान होता है। वस्तुतः भगवान् इनको इसलिये देते हैं कि इनके द्वारा भगवान्‌की पूजा करके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनुष्य कृतार्थ हो जाय, पर ऐसा न करके वह यदि इनका स्वामी बनकर भगवान्‌को भूल गया, तो वह भोगोंका स्वामी नहीं, भोगोंका किंकर है। भोग उसे चाहे जहाँ ले जाते हैं। वे उसे धर्मच्युत कर देते हैं। वह भोगका गुलाम है। इसलिये भगवान्‌ने भोगोंको 'दुःखयोनि' कहा है। भोगोंपर स्वामित्व हो, मन निगृहीत हो, सारे-के-सारे भोग और अन्तःकरण निरन्तर भगवान्‌की सेवामें लगे हों, तभी भोगोंका स्वामित्व है। ऐसा नहीं है तो भोगका स्वामी कहलाकर भी वह भोगका गुलाम बना हुआ है और जहाँ भोगोंकी गुलामी है, वहाँ भगवान्‌की कृपा कैसी ! भगवान्‌की कृपा तो वहाँ आती है, जहाँ सारी गुलामी छूटकर केवल भगवान्‌की दासता होती है। तमाम परतन्त्रता टूट गयी, रह गया केवल भगवान्‌का चरणाश्रय। वहीं होता है भगवान्‌की कृपाका प्राकट्य। जितनी-जितनी भोगोंकी वृद्धि होती है, उतनी-उतनी उनकी दासता बढ़ती है। जिसकी जितनी बड़ी ख्याति है, बड़ी कीर्ति है, उसकी उतनी ही अधिक बदनामी होती है; इसलिये भोगबाहुल्य भगवान्‌की कृपाका लक्षण नहीं है। भगवान्‌की कृपा तो वहाँ होती है, जहाँ भगवान्‌का प्रेम है और भगवच्चरणानुराग है। कितने साधक कहते हैं कि 'अमुक आदमी कितना सुखी हो गया। कितने पैसेवाला हो गया, उसके व्यापार हो गया, आपने उनपर कृपा की। हमारे साथ तो आपका दुर्भाव है।' पर उन्हें कैसे समझाया जाय कि भोगबाहुल्य तो भगवान्‌की अकृपाका लक्षण है। तुलसीदासजीने घोषणा की—

जाके प्रिय न राम-बैदेही।
तजिये ताहि कोटि बैरी सम जद्यपि परम सनेही।।
तज्यो पिता प्रहलाद बिभीषन बंधु भरत महतारी।
बलि गुरु तज्यो कंत-ब्रजबनितनि भे जग मंगलकारी।।

जिसको भगवान् सीताराम प्यारे नहीं हैं, वे यदि प्यारे-से-प्यारे हों, परम सनेही हों, तब भी वे त्याज्य हैं। यदि हम किसीके माता-पिता, भाई, गुरु, स्वामी हैं, तो हमारा यह कर्तव्य है कि हम उन्हें भगवान्‌में लगानेका प्रयास करें, न कि उन्हें नरकोंमें पहुँचानेका प्रबन्ध कर दें। वह पिता पिता नहीं, वह माता माता नहीं, वह भाई भाई नहीं, वह गुरु गुरु नहीं और वह देवता देवता नहीं जो भगवान्‌से हटाकर हमें भोगोंमें लगा दे। इसीलिये तुलसीदासजीने कहा—

तुलसी सो सब भाँति परम हित पूज्य प्रान तें प्यारो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जातें होय सनेह राम पद एतो मतो हमारो।।

'वही परम हितैषी है, वही परम पूज्य है, वही प्राणोंका प्यारा है, जिससे रामके चरणोंमें स्नेह बढ़े, यह हमारा निश्चित मत है।' भगवान्‌में मन लगे, भोगोंसे मन हटे। वास्तवमें भोगको प्रोत्साहन देना मनुष्यको बिगाड़ना है, उसे बुरे मार्गमें लगाना है। ऐसे मार्गमें लगा देना तो उसके साथ शत्रुता करनी है। ऐसी कोई वस्तु कोई किसी प्राणीको दे दे कि वह भगवान्‌को भूल जाय। अमृत भूलकर विष खा ले तो वह मित्र नहीं। उसका मुँह ऊपरसे मीठा है, पर भीतर उसके हलाहल भरा हुआ है। मित्र वह है जो अंदरसे मित्र है और जो हमें सुधार देता है। विषय–भोगोंमें लगानेवाले मित्र कदापि मित्र नहीं। ऐसे ही मित्रके लिये कहा गया है—'विषकुम्भं पयोमुखम्।' ऐसे जहर–भरे दुधमुँहे घड़ेके सदृश ऊपरसे मीठे बोलकर विषयोंमें लगानेवाले मित्रोंको छोड़ देनेमें ही कल्याण है। संसारके विषय–भोग ठीक ऐसे ही हैं। वे देखनेमें अमृत लगते हैं, पर परिणाममें विष ही सिद्ध होते हैं। परिणामे विषमिव। माता, पिता, गुरु, भाई, मित्र किसीको दूध बताकर विष दे देना, उसका उपकार करना नहीं, बुरा करना है। अतएव सबको स्पष्ट बता देना चाहिये कि इस विषसे बचो। यह मार देगा, यह नरकोंमें डाल देगा। पर यह कहना तो तभी बनता है, जब हम स्वयं इससे बचे हुए हों। असली चीज तो यही है कि भोगोंकी प्राप्ति, भोगोंकी स्पृहा, भोगोंको प्राप्त करनेकी कामना, मकान, मोटर, अधिकार, पद, पाँच आदमी मेरे आगे–पीछे चलें, यह कामना तथा यह सब देखकर मनका ललचाना, यह सब नरकरूप ही कहे गये हैं।

ते नर नरकरूप जीवत जग भव–भंजन–पद–बिमुख अभागी।।

इसीलिये वे अभागे हैं, उनका जीवन नरकरूप है। संसारके इन प्रलोभनीय वस्तुओंको देना, इनमें लगा देना, इनमें आकर्षण उत्पन्न कर देना, उसकी महत्ता बना देना हितकर नहीं है, जिनके पास ये सामग्रियाँ हैं, उनको भी इनकी बुराइयाँ बता देनी चाहिये।

भगवान्‌की कृपाका आश्रय करें और भगवान्‌की कृपा जब जिस रूपमें आये, स्वागत करें। यदि वह कृपा हमारा मान भंग करनेवाली हो, इज्जत मिटानेवाली हो, जगत्‌से सम्पर्क हटानेवाली हो, तब यह समझना चाहिये कि भगवान्‌का सांनिध्य प्राप्त होनेवाला है। यह संसारका नियम है कि जगत् तभीतक पकड़ता है, जबतक उससे कुछ मिलता रहें। बूढ़े माता–पिताको भी लोग कहते हैं, भगवान् सुन लें तो अच्छा है, अर्थात् ये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चल बसें, तो सुख रहे। जगत्‌के भोग किसीके नहीं हैं। किसीका यथार्थ प्रेम नहीं है। वनमें, मानमें, कीर्तिमें कहीं भी सुख नहीं है। केवल जो आत्मा है, जो हमारा अपना स्वरूप है, जो सदा है, इस शरीरके नष्ट होनेपर जो हमारे साथ रहेगा, उसीमें सुख है। ये धन, कीर्ति और मानका सुख उधार लिया मिथ्या सुख है, हम उन्हें सुखका स्वरूप समझ लेते हैं। यह हमारी भूल है, ये न तो सुख है और न ये सदा रहते ही हैं। साधकको चाहिये कि वह निरन्तर भोगोंसे मन हटाता रहे, भोग हमारे शत्रु हैं, यह भाव मनमें बार–बार भरता रहे और प्रेममय–आनन्दमय भगवान्‌में मन लगाता रहे।

इसके लिये पूरा प्रयत्न करें। भोगोंका नाश हो तो दुःखी न होकर परम सौभाग्य मानें, उसमें सहज सुहृद श्रीभगवान्‌की कृपाका अनुभव करें। भगवान् हमारे नित्य सुहृद हैं। वे कभी अकृपा करना जानते ही नहीं। मलेरिया होनेपर डाक्टरने कड़वी दवा दे दी, हम मानते हैं कि यह हमारे लाभके लिये है। इसी प्रकार आवश्यक होनेपर भगवान् हमें कड़वी दवा देंगे। डाक्टरके द्वारा हमारे हितके लिये किये जानेवाले अंगच्छेद (ऑपरेशन) की भाँति आवश्यकता होनेपर वे हमारा अंग भी काट सकते हैं, पर उसमें हमारा लाभ ही होगा। हमारे भयानक दुःखदायी रोग–दोष और हमारी बीमारी दूर करनेके लिये भगवान् हमपर कृपा कर रहे हैं, यह समझना चाहिये। भगवान्‌की कृपा समझकर निरन्तर उनका नाम लेता रहे और अपना जीवन भगवान्‌की इच्छाके अनुकूल बनावे। भगवान् हमारा सारा कार्य करते हैं, वे नित्य हमारा हित ही करते रहे हैं और आगे भी करते रहेंगे, यह विश्वास रक्खें तो निश्चय ही हम निहाल हो जायँगे।

भगवान् परम सुहृद

याद रक्खो—–भगवान् सर्वशक्तिमान् हैं, सर्वज्ञ हैं और तुम्हारे परम सुहृद हैं। उनमें विश्वास करो, उनकी कृपा तुम्हें निश्चय ही समस्त बन्धनों, समस्त विपत्तियों और समस्त कठिनाइयोंसे उबार लेगी। उनके इन गीताके वचनोंपर विश्वास करो—–'कोई कैसा भी पापी हो, मेरे शरण आनेपर मैं तुरंत उसके पापोंको धोकर उसे साधु और भक्त बना लेता हूँ, फिर उसे सनातन शान्ति मिल जाती है, मेरे उस भक्तका कभी पतन नहीं होता। मुझमें मन लगा दो, फिर मेरी कृपा तुम्हें सारे संकटोंसे अनायास ही तार देगी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

याद रक्खो—संकट या विपत्तिका निवारण करनेके लिये बाहरी निर्दोष उपाय करना न तो बुरा है, न पाप है। पर यह निश्चय नहीं है कि उससे तुम्हारी विपत्तिका नाश हो ही जायेगा; क्योंकि उसमें अत्यन्त सीमित तथा क्षुद्र शक्ति है। भगवान् महान् शक्तिके अनन्त भण्डार हैं, उनके शरण होकर यदि तुम केवल उन्हींपर पूर्णरूपसे निर्भर करोगे तो भगवान्‌की वह महान् शक्ति तुम्हारी सहायता करने लगेगी। जब तुम सहज ही अपरिसीम महान् शक्तिकी सहायता प्राप्त कर सकते हो, तब ससीम क्षुद्र शक्तिके पीछे पड़कर क्यों अपना समय नष्ट करते हो ?

याद रक्खो—तुम्हारी विपत्तियाँ चाहे जितनी बड़ी हों, अन्धकार चाहे जितना गहरा हो, दुःख चाहे जितने भयानक हों, बन्धन चाहे जितना कठिन हो; भगवान्‌की कृपाशक्तिका आश्रय—पूर्ण आश्रय लेनेपर तुम अपनेको इन सबसे मुक्त आनन्द–निकेतनमें विश्राम करते पाओगे।

याद रक्खो—जब कभी परिस्थिति प्रतिकूल हो, अनुकूलताके सारे साधन नष्ट–भ्रष्ट हो रहे हों, चारों ओर केवल निराशा और घोर अन्धकार दिखायी देता हो, अशान्तिकी बड़ी भयानक आँधी आ रही हो, तुम उस समय तुरंत दयामय प्रभुके दरबारमें पहुँच जाओ, क्षणभरके लिये भी वहाँसे न हटो, न उतरो। केवल भगवान्‌पर ही दृष्टि लगाये उनका अनन्य चिन्तन करते रहो। ऐसा दृढ़ विश्वास करो कि 'भगवान् असम्भवको सम्भव कर सकते हैं। मेरी प्रतिकूल स्थितिको बदलना उनके लिये कुछ भी कठिन नहीं है। मैं उनकी कृपापर निर्भर हूँ। वे मेरा परम कल्याण निश्चय ही करेंगे।' तुम थोड़े ही समयमें देखोगे—आकाश स्वच्छ हो गया है। सारी आँधी चली गयी है और अनुकूलताके सारे साधन सुन्दरतासे जुट रहे हैं।

याद रक्खो—तुम्हारी प्रतिकूलता, विपत्ति और कठिनाईका विनाश करनेमें भगवान्‌को बड़ा सुख मिलता है। आवश्यकता केवल इतनी ही है कि तुम अपना हृदय खोलकर उनके सामने रख दो। डरो मत, कभी निराशाके विचार मनमें मत लाओ। कभी यह मत सोचो कि 'हमको सदा अन्धकार, प्रतिकूलता और विपत्तिके जंगलोंमें ही भटकना है।' मंगलमय भगवान्‌के राज्यमें ऐसा सोचना एक प्रकारका अपराध है।

याद रक्खो—तुम्हारी जो भी आस्था हो, तुम जहाँ भी हो, तुम जैसी भी प्रतिकूल परिस्थितिमें पड़े हो, भगवान्‌के लंबे हाथ तुम्हारी रक्षाके लिये सदा पर्याप्त हैं। भगवान् एक क्षणमें तुमको ही नहीं, अनन्त विश्व ब्रह्माण्डको समस्त दुःख, विपत्ति, बन्धन और अन्धकारसे मुक्त करके अपने दिव्य ज्ञानकी ज्योतिसे प्रफुल्लित और प्रकाशित कर सकते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

याद रक्खो—भगवान्‌की अतुल बलवती कृपाशक्तिके सामने तुम्हारे पाप-तापोंमें, आपद्-विपद्के आँधी-तूफानमें शक्ति ही कितनी है, जो उसके सामने ठहर सके। इसपर विश्वास करो।

याद रक्खो—तुम्हारी विश्वासहीनता ही तुम्हारे लिये परम विपत्ति है। भगवान्‌पर, उनकी कृपापर, उनकी सुहृदतापर और उनकी आत्मीयतापर विश्वास करो। उनकी ओर बढ़ो, उनपर निर्भर हो जाओ। उनकी महान् कृपाशक्तिसे तुम सहज ही समस्त संकट, बन्धन और अज्ञानान्धकारसे मुक्त हो जाओगे !

भगवत्कृपासे कठिनाइयोंका अन्त

याद रक्खो—भगवान्‌के कृपाबलसे जीवनकी सारी कठिनाइयाँ वैसे ही दूर हो जाती हैं जैसे सूर्यके प्रकाशसे अन्धकार।

याद रक्खो—कठिनाइयाँ सारी मनमें होती हैं, बड़े घने अन्धकारका निर्माण संसारको इसी रूपमें सत्य माननेवाला तुम्हारा विषयासक्त मन ही करता है। भगवान्‌के कृपाबलसे मनकी यह भ्रान्ति मिट जाती है। मलिन मन धुल जाता है। फिर किसी कठिनाईकी कल्पना भी नहीं रहती, सर्वत्र सर्वदा सरलताके साथ सदानन्दमयी प्रभुकृपाकी झाँकी होती रहती है।

याद रक्खो—फिर जीवन-मरण, संयोग-वियोग, लाभ-हानि, मान-अपमान, स्तुति-निन्दा, जय-पराजयके कोई भी द्वन्द्व किसी प्रकारका असर नहीं करते; सभी कृपामयकी कृपा-लीलाके मधुर दृश्य बन जाते हैं।

याद रक्खो—जब तुम अपनेको भाग्यहीन, दुर्दशाग्रस्त, दुःखी, निराश्रय, निराश, असहाय मानते हो, तबतक तुमने भगवान्‌के परम कृपाबलको नहीं अपनाया है। भगवान्‌के कृपाबलका आश्रय लेते ही भाग्य चमक उठता है, दुःखके बादल तितर-बितर हो जाते हैं, परम आश्रय पाकर चित्त उल्लसित हो उठता है, 'निराश और असहाय' माननेकी वृत्ति ही नष्ट हो जाती है। जिसको भगवत्कृपाका आश्रय हो, उसमें निराशा और असहायताकी भावना क्यों रहने लगी ?

याद रक्खो—तुम भगवान्‌के कृपापात्र हो, स्नेहपात्र हो, अपने हो, प्यारे हो। जगत्‌में चाहे तुम दीन, दुखी, घृणित, अपमानित, उपेक्षित, विषय-पदार्थ-हीन, मलिन कुछ भी माने जाते हो, कैसे भी दीखते हो—भगवान्‌की आत्मीयता, उनका प्यार किसी अवस्थामें जरा भी कम नहीं होता। सर्वभूतसुहृद भगवान्‌का स्वभाव बदले, तब कहीं उसमें कमीकी शंका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो। नित्य सम एकरस भगवान्का सर्वभूत—सौहार्द भी नित्य है; क्योंकि वह उनका स्वभाव है। फिर तुम जो अपनेको सर्वलोकमहेश्वर, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञके सर्वथा और सर्वदा प्रीतिभाजन, प्रिय होनेपर भी, दीन–हीन, भाग्य–हीन मानते हो, इसीसे तुम दीन–दुःखी रहते हो। अपनी इस झूठी मान्यताको छोड़ दो। भगवान्के अनुग्रहका, उनके सौहार्दका, उनकी प्रीतिका अनुभव करो और उनके कृपाबलको अपनी सम्पत्ति मानकर, उसपर अपना हक मानकर उससे सम्पन्न हो जाओ।

याद रक्खो—जगत्के ये सारे दुःख–क्लेश, सारे अभाव–अभियोग, सारे शोक–विषाद तभी तक हैं जबतक तुम्हें भगवान्की कृपाके दर्शन नहीं हुए। जिस क्षण भगवत्कृपाकी झाँकी तुम्हारे मनने की, उसी क्षण भगवत्कृपाका परम बल तुम्हारा सारा अभाव मिटा देगा।

याद रक्खो—अभावकी वृत्ति मनसे पैदा होती हैं और जिस वस्तुका यथार्थमें अभाव है, उसकी कल्पनासे अभावकी वृत्ति शान्त होती नहीं, इसीसे प्रत्येक विषयलाभ अभावकी अभिवृद्धि करनेवाला होता है। अभावका नाश तो होगा, जो भाववाली है, सदा है, सदा रहेगी, उस सच्ची वस्तुकी प्राप्तिसे और वह सच्ची वस्तु है—नित्य सत्य भगवान्।

याद रक्खो—ये नित्य सत्य भगवान् ही आनन्ददाता हैं, आनन्दके केन्द्र हैं, आनन्दमय हैं। इन भगवान्की प्राप्ति होती है, इनकी महती कृपासे और वह कृपा सदा सबके अधिकारकी वस्तु है; क्योंकि भगवान् स्वभावसे ही सर्वसुहृद् हैं। तुम यदि उसको दुर्लभ, अपने अधिकारसे परेकी वस्तु मानोगे, तब तो तुम उससे वञ्चित ही रहोगे; पर अधिकारकी मानते ही तुम्हारा उसपर अधिकार हो जायेगा और वह तुम्हारे सारे दुःख–क्लेशोंको मिटाकर तुम्हारे हृदयमें परम शान्तिके सुखद अनन्त सागरको लहरा देगी।

———

अहैतुकी भगवत्कृपा

याद रक्खो—भगवान् हैं; भगवान् सदा–सर्वत्र हैं, भगवान् सबके हैं; तुम्हारे भी हैं—उतने ही जितने वे किसी भी बड़े–से–बड़े संत–महात्माके हैं। भगवान्पर सदा सुदृढ़ तथा अटल विश्वास रक्खो; उनकी अहैतुकी कृपा सदा तुमपर अनवरत बरस रही है—इसपर विश्वास रक्खो।

याद रक्खो—भगवान्की सत्ता, भगवान्की सर्वशक्तिमत्ता, भगवान्की सर्वज्ञता, भगवान्की सहज सर्वभूतसुहृदता, भगवान्की दीनबन्धुता नित्य, सत्य, सनातन, अक्षुण्ण एवं अपरिसीम है। इसपर कभी तनिक भी संदेह न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करो। वरं सुदृढ़ विश्वास रक्खो।

याद रक्खो—भगवान्के ये स्वरूपभूत गुण सदा ही तुम्हारे लिये कार्य कर रहे हैं, इसपर तुम जितना ही अधिक विश्वास रक्खोगे, उतना ही तुम्हें अनुभव होगा कि भगवान् नित्य तुम्हारे समीप—तुम्हारे साथ रहकर अपनी अचिन्त्य–अनिर्वचनीय–अनन्त शक्तिमत्ता, सर्वज्ञता, सुहृदता और दीनबन्धुतासे तुम्हारा परम कल्याण कर रहे हैं।

याद रक्खो—जब तुम्हारा भगवानपर और उनके स्वरूपभूत गुणोंपर विश्वास हो जायेगा, तब तुम्हें सांसारिक दृष्टिसे महान् दुःखमयी, कष्टमयी, संतापमयी स्थितिमें भी परम शान्ति तथा परम सुखकी अनुभूति होगी। तुम सदा यही देखोगे कि भगवान् तुम्हारा परम कल्याण करनेके लिये तुम्हारे अपने माने हुए मिथ्या तन–मनसे तुम्हारा मोह छुड़ाकर तुम्हें अपने अत्यन्त निकटस्थ रखनेकी मंगलमयी व्यवस्था कर रहे हैं।

याद रक्खो—भगवान्का प्रत्येक विधान तुम्हारे निश्चित कल्याणके लिये है; अतएव कभी निराश मत होओ, कभी भय न करो, कभी विषाद मत करो। भगवान्की नित्य अहैतुकी कृपापर विश्वास रक्खो, जगत्के प्राणी–पदार्थसे कुछ भी आशा न रखकर अपने वास्तविक कल्याणके लिये भगवान्पर पूर्ण विश्वासके साथ निश्चित आशा करो। सतत अशान्वित रहो और हर हालतमें परम सुखका अनुभव करो।

याद रक्खो—तुम वस्तुतः भगवान्की सेवाके लिये ही जगत्में भेजे गये हो। तुम्हें अपने प्रत्येक पदार्थको, प्रत्येक विचारको, प्रत्येक शक्ति–सामर्थ्यको एवं प्रत्येक क्रियाको भगवान्की वस्तु मानकर उन सबके द्वारा नित्य–निरन्तर भगवान्की सेवामें ही लगे रहना है। यह न करके यदि तुम अपनेको अन्य किसी कार्यके लिये आया मानते हो, या जगत्के प्राणी–पदार्थ–परिस्थितियोंको अपनी मानकर अपने सुखोपभोगोंके लिये उनका उपयोग करना चाहते हो तो तुम बड़ी भूलमें हो; भूलमें ही नहीं हो—अपराध कर रहे हो, पाप बटोर रहे हो—जिनका फल तुम्हें बहुत बुरे रूपमें भोगना पड़ेगा।

याद रक्खो—तुम जो कुछ अच्छे विचार या अच्छे कर्म करते हो, वह सब भगवान्की सत्प्रेरणा और भगवान्की शक्तिसे ही करते हो। कभी किसी भी अच्छे विचार या अच्छी क्रियामें अपनेको कर्ता मानकर तनिक भी अभिमान न करो, वरं भगवान्ने तुम्हें अच्छेमें निमित्त बनाया। इसके लिये उनके कृतज्ञ होओ और विशेष उत्साहके साथ सेवामें लगे रहो।

याद रक्खो—भगवान्का कृपामय मंगलविधान भगवान्की सर्वज्ञताके साथ ही निर्मित हुआ है। उसका कब कैसे प्रयोग होगा और किस रूपमें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कैसे उससे फलका उदय होगा—यह सब पहलेसे सुनिश्चित है। अतएव कभी ऊबो मत, घबराओ मत, अधीर मत होओ, आशामें तनिक भी कमी न आने दो और फलकी मंगलमयता तथा भगवद् रूपतामें तो कभी तनिक भी संदेह न करो। शीघ्र या देर—दोनों ही भगवान्‌के कल्याण-विधानके अनुसार निश्चित ही तुम्हारे परम कल्याणके लिये ही हैं। तुम तो निश्चिन्त रूपसे नित्य-निरन्तर उनकी कृपाकी प्रतिक्षा करते हुए—सर्वत्र सब अवस्थाओंमें उनकी कृपाके दर्शन करते हुए उनके भजनमें उनकी सर्वतोमुखी सेवामें ही लगे रहो।

अनन्त और अपार भगवत्कृपा

याद रक्खो—भगवत्कृपा अनन्त और अपार है। वह सभी प्राणियोंपर सभी परिस्थितियोंमें, सभी समय बरसती रहती है। जो उसपर विश्वास करता है, वह उस सर्वथा समभावसे सबको प्राप्त होनेवाली कृपाका अनुभव कर सकता है। जिसका मन अविश्वासके तथा संदेहके अन्धकारसे ढका है, उसे उस परम रहस्यमयी अहैतुकी कृपाके दर्शन नहीं होते।

याद रक्खो—उस कृपाके असंख्य रूप हैं और वह आवश्यकतानुसार विभिन्न रूपोंमें प्रकट होती रहती है। भगवान्‌के अनुग्रहपूर्ण मंगलमय विधानमें मनुष्य जब संदेह करता है, उसके विरुद्ध निश्चय तथा आचरण करता है, तब भगवत्कृपा भयानक रूपमें प्रकट होकर विपत्ति और वेदनाके द्वारा उसके हृदयकी विशुद्धि करती है और जब मनुष्य विश्वासपूर्ण हृदयसे प्रत्येक परिस्थितिमें उसके अनुकूल आचरण करता है, तब वह कृपा बड़े सौम्यरूपमें आत्मप्रकाश करती है।

याद रक्खो—भगवत्कृपा किसी भी रूपमें प्रकट हो, वह सदा मंगलमयी है और मंगल ही करती है। दवा मीठी भी दी जाती है, कड़वी भी, कहीं-कहीं अंग काटकर भी चिकित्सक अंदरके मवादको निकालता है। पर इन सबमें उद्देश्य एक ही होता है-रोग नाश। रोगके अनुसार ही दवाका प्रयोग या ऑपरेशनकी क्रिया की जाती है; इसी प्रकार भगवत्कृपाके भी विविध रूप होते हैं—हमारे परम मंगलके लिये ही।

याद रक्खो—बाहरी वस्तुओं तथा परिस्थितियोंसे कृपाका पता नहीं लगता। अनुकूल वस्तु या परिस्थितिमें कृपा समझना और प्रतिकूलमें कृपाका अभाव मानना सर्वथा भ्रम है। कृपामय भगवान्‌का प्रत्येक विधान कल्याणमय है, 'वे जो कुछ करते हैं, सर्वथा निर्भ्रान्त रूपसे हमारे परम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कल्याणके लिये ही करते हैं।' जैसे सुख—सौभाग्यमें अत्यन्त अनुकूल दिखायी देनेवाले पदार्थ और परिस्थितिकी प्राप्तिमें उनकी कृपा रहती है, ठीक वैसी ही दुःख, दुर्भाग्य, अत्यन्त प्रतिकूल दीखनेवाले पदार्थ और परिस्थितिकी प्राप्तिमें रहती है।

याद रक्खो——जब तुम विश्वासकी दृष्टि प्राप्त कर लोगे, तब तुम्हें यह प्रत्यक्ष दिखलायी देगा कि तुम्हें प्राप्त होनेवाले प्रत्येक पदार्थ और परिस्थितिमें भगवत्कृपाका मंगलमय कार्य हो रहा है। फिर तुम्हें चोटका दुःख जरा भी न होगा, वरं चोट करनेवाले परम प्रेमास्पद परम कल्याणमय नित्य सहज सुहृद् प्रभुके मंगलमय कोमल आनन्दमय कर—स्पर्शका आनन्द प्राप्त होगा।

याद रक्खो——भगवान् सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वथा निर्भ्रान्त, सर्वलोकमहेश्वर हैं, वे सब कुछ जानते, सब कुछ कर सकते हैं एवं सबके स्वामी हैं। उनसे कभी भूल नहीं होती। ऐसे भगवान् सतत सावधानीके साथ सहज रूपमें तुमपर कृपा—वर्षा करते रहते हैं। तुम विश्वास करो, अपनेको उनके चरणोंपर बिना किसी शर्तके डाल दो, उनके प्रत्येक विधानकी मंगलमयतामें विश्वास करके उसका हृदयसे स्वागत करो, अपनेको सम्पूर्ण कर दो। उनके कृपामय विधानको बदलना मत चाहो। फिर देखेंगे——उनकी कृपा सीधी तुम्हारे जीवनपर बरसेगी तथा तुम्हारे वर्तमान और भविष्यको परम उज्ज्वल तथा परम आनन्दमय बना देगी।

याद रक्खो——तुम जो कुछ प्राप्त करना चाहते हो, जब वह नहीं होता और जब उसमें अचानक ऐसी बाधा आ जाती है जो तुम्हारे मनोरथको नष्ट कर देती है, तब वहाँ तुम भगवान्की कृपाके दर्शन करो। भगवत्कृपा ही बाधा बनकर आयी है और तुम्हें भारी दुःखसे बचानेके लिये, जिसकी तुम्हें कल्पना नहीं है और वह भली—भाँति जानती है, तुम्हारे इस कार्यको असफल कर देती है।

याद रक्खो——तुम भगवत्कृपासे अपने मनका काम करवाना चाहते हो, यही तुम्हारी बड़ी भूल है। यहीं तुम सीधी तुमपर उतरनेवाली कृपाकी धारामें बाधा देते हो। भगवत्कृपासे कह दो मुक्तकण्ठसे विश्वासकी मौन वाणीमें स्पष्ट कह दो कि 'तुम जो ठीक समझो, जब ठीक समझो, जैसे ठीक समझो, वही उस समय, वैसे ही करो।' अपनेको बिना शर्तके, बिना कुछ बचाये——भगवत्कृपाके समर्पण कर दो। फिर भगवत्कृपा निर्बाध रूपसे अपना मंगलमय दर्शन देकर तुम्हें कृतार्थ कर देगी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्वशक्तिमान् भगवान्की अनन्त असीम अहैतुकी कृपापर विश्वास करो

मुझे यदि किसीको कोई अच्छी बात दिखायी देती है तो वह भगवत्कृपाका ही चमत्कार है। मेरे पास सचमुच कोई भी साधन–सम्पत्ति या किसी प्रकारकी भी सिद्धि नहीं है। जो कुछ है—केवल नित्य सहज सुहृद श्रीभगवान्की कृपाका ही बल है। बस, वह कृपा ही सर्वस्व है—

सकल साधना–सिद्धि–शून्य, है केवल कृपा–सहारा।
कृपा, कृपा, बस कृपा एक ही, है सर्वस्व हमारा।।

इसलिये मुझसे जो कोई भी साधन पूछते हैं, मैं उनसे यही कहता हूँ—भाई, भगवान्की अहैतुकी कृपापर भरोसा करो; उसीका आश्रय करो। भगवान्की कृपाशक्ति सारी शक्तियोंकी सिरमौर है—जहाँ कृपाशक्ति प्रकट होती है, वहाँ सारी शक्तियाँ उसकी सहायक तथा अनुगत हो जाती हैं।

जा पर कृपा राम कर होई। ता पर कृपा करहिं सब कोई।।

तुम भी भगवान्की इस अहैतुकी कृपापर विश्वास करो। ऐसा विश्वास करो—तुमपर भगवांन्की असीम, अनन्त कृपा है, तुम उस कृपा–सुधा–सागरमें डूब रहे हो। तुम्हारा यह विश्वास जितना ही दृढ़ और प्रत्यक्ष होगा, उतना ही तुम उस महती कृपाका अनुभव प्राप्त कर सकोगे।

बार–बार निश्चय करो—

मुझपर सर्वशक्तिमान् भगवान्की अनन्त कृपा है; वे भगवान् मुझपर अहैतुक प्रेम करते हैं;

उनकी कृपाशक्तिसे मेरे सारे विघ्न–बाधा नष्ट हो गये और हुए जा रहे हैं

उनकी कृपाशक्तिके प्रकाशमें मेरे समीप किसी प्रकारका अन्धकार नहीं आ सकता;

उनकी कृपाशक्तिसे मेरे सारे दुर्गुण–दुर्विचार नष्ट हो गये हैं;

उनकी कृपाशक्तिसे मुझमें विश्वास, प्रेम, शान्ति, समता आदि उत्पन्न हो गये हैं;

उनकी कृपाशक्तिसे मेरी वृत्ति संसारसे हटकर उन्हींमें रमने लगी है;

उनकी कृपाशक्तिसे मेरा भविष्य परमोज्ज्वल हो गया है; मैं समस्त पाप–तापसे मुक्त होकर उनके चरणकमलोंमें निश्चय ही पहुँच जाऊँगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मत निराश हो मत घबरा रे ! मत कर मनमें जरा विषाद।
जा चरणोंमें सहज सुहृदके, पा ले उनका कृपा प्रसाद।।
दीनोंको अपनाना—सुखी बनाना उनका सहज स्वभाव।
पतितोंको पावन करनेका उनके मन रहता नित चाव।।
रो–रोकर कह दयासिन्धुसे—'करो नाथ ! मेरा उद्धार।
हरो दुःख–दुर्भाग्य–दोष–दुष्कर्म, दुष्ट–आग्रह, कुविचार।।
त्रिबिध–ताप–हर हर लेंगे हरि, सुनते ही तेरा चीत्कार।
तुझे स्थान देंगे निज दासोंमें वे करुणा–पारावार।।

(पद रत्नाकर पद सं० १२८३)

लाभ–हानि, सुख–दुःख, प्रतिष्ठा–निन्दा और मान–अपमान।
हैं अनित्य ये सभी द्वन्द्व, या हैं प्रभुके ही रचित विधान।।
मिलता जाता कभी न कुछ इनसे, या करते सब कल्याण।
प्रभुकी सहज कृपा अनन्तसे होता इन सबका निर्माण।।
प्रभुके मंगलमय विधानपर मनमें रक्खो दृढ़ विश्वास।
कैसी भी स्थितिमें मत होओ कभी क्षुब्ध या तनिक उदास।।
है जगका सब कुछ अनित्य, है दुःखपूर्ण सारा व्यापार।
बरस रही है सहज सुहृदतम प्रिय प्रभुकी नित कृपा अपार।।

(पद रत्नाकर पद सं० १२८२)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमारे प्रकाशन

१. श्रीभाईजी—एक अलौकिक विभूति		६०.००
(पू० श्रीभाईजी एवं श्रीसेठजीकी संक्षिप्त जीवनी) संयोजन श्रीश्यामसुन्दरजी दुजारी		
२. भाईजी चरितामृत (पू० भाईजीके शब्दोंमें उनके जीवन प्रसंग)		
(संयोजन श्रीश्यामसुन्दजी दुजारी)		
३. सरस पत्र	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	३०.००
४. व्रजभावकी उपासना	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	२५.००
५. परमार्थकी पगडंडियाँ	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	३०.००
६. सत्संगवाटिकाके बिखरे सुमन	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	३०.००
७. वेणुगीत	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	३५.००
८. समाज किस ओर जा रहा है	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	३०.००
९. प्रभुको आत्मसमर्पण	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	३०.००
१०. भगवत्कृपा	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	५.००
११. श्रीराधाष्टमी जन्म-व्रत महोत्सव	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	५.००
१२. शान्तिकी सरिता	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	
१३. रासपञ्चाध्यायी	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	
१४. आस्तिकताकी आधार-शिलाएँ	श्रीराधा बाबा	३५.००

पुस्तकें एवं पू० श्रीभाईजीके प्रवचनोंके एवं पदोंके कैसेट प्राप्ति स्थान

गोरखपुर : गीतावाटिका प्रकाशन
पो० गीतावाटिका, पिन०—२७३००६
फोन—०५५१—३१२४४२

कलकत्ता : श्रीसुशीलकुमारजी मुँधड़ा
८, इण्डिया एक्सचेंज प्लेस (८ वाँ तल्ला)

वाराणसी : श्रीहनुमानप्रसाद पोद्दार स्मृति ट्रस्ट
बी. २७/८२, दुर्गाकुण्ड रोड

गाजियाबाद : श्रीशिवकुमारजी दुजारी
के. आई० १५५, कविनगर

मुम्बई : भारतीय ग्रामोद्योग वस्त्र भण्डार
सिंघानिया वाडी, १८७ दादीसेठ अग्यारी लेन,
फोन० —२०१३८२१

नोट : कैसेटकी विस्तृत सूची उपरोक्त पतोंपर प्राप्त की जा सकती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri